भव्य

2019-21

के. पी. ट्रेनिंग कालेज, इलाहाबाद

K.P. Training College, Allahabad

दातव्यमिति यदनं दीपतेऽनुपकारिणे।
देश काले च पात्रे च तछानं सात्त्विक स्मृतम

कोटि-कोटि वंदनीय कायस्थ कुल शिरोमणि
मुंशी काली प्रसाद जी
(3 दिसम्बर 1840 - 9 नवम्बर 1886)

भव्य

2019-21

संरक्षक
चौ० जीतेन्द्र नाथ सिंह
(अध्यक्ष)

●

प्रधान सम्पादिका
डॉ० (श्रीमती) अंजना श्रीवास्तव
(प्राचार्या)

●

संपादक मण्डल
डॉ० (श्रीमती शक्ति शर्मा)
डॉ० (श्रीमती) शरद श्रीवास्तव
डॉ० (श्रीमती) प्रियंका सिंह

मुंशी काली प्रसाद वन्दना

जय जय काली प्रसाद, तेरी बलिहारी।
तेरे यश की महान, रश्मियाँ प्रकाशमान।
चारु चन्द्रिका समान, जीवन मनहारी
जय जय .....

हिय में अति हर्ज़मान करती कर्तव्य ज्ञान।
तेरी शुभ कीर्तिमान भारती सुखारी।
जय जय .....

अपने कुल की महान दुर्गति पर दया आन।
कर निज सर्वस्व दान महिमा विस्तारी।
जय जय .....

हे प्रभो कृपा निधाान देवलोक की महान।
आत्म में प्रदीप्तमान मानव तन धाारी।
जय जय .....

Prof. Sangita Srivastava
Vice-Chancellor

University of Allahabad
Allahabad (U.P.) 211 002, India

Message

I am happy to know that the K.P. Training College, Prayagraj is going to publish its annual magazine titled "Bhavya" . The wide range of subjects in terms of the creative, informative and intellectual pieces in this magazine, is a testimony of the excellence of education, both in academiccs and in multiple other dimensions of education, over a period, Publications such as these help in all-round development of our students, sharpen their critical thinking and creative articulations.

I congratulate the students, faculty. and administration of the college whose collective endeavors are showcased in the magazine, and I am sure that several of our students whose works have been published here will go on to pursue their creative journeys further.

(Sangita Srivastava)

Dr. Anjana Srivastava
Principal
K.P. Training College,
Prayagraj

President
Ch. Jitendra Nath Singh
Advocate

The ***Kayastha Pathshala***
12/4, Kamla Nehru Road,
Prayagraj (Allahabad)

Message

It gives me immense pleasure to learn that the college is bringing out their magazine **"Bhavya"**. It is so beautiful to see the continuous progress being made by the college in academic and non-acaddemic area. Various achievements of the college is extremely inspiring. It's my belief that in future also, this college will continue on the path of progress and development.

With hearties wishes

(Ch. Jitendra Nath Singh)

Dr. Anjana Srivastava
Principal
K.P. Training College,
Prayagraj

Dr. Sunil Kant Mishra
Finance Officer

University of Allahabad
Allahabad (U.P.) 211 002, India

Message

It gives me immense pleasure to learn that KPTC is publishing its annual magazine named **"BHAVYA"** of the session 2019-2021. The journey of this training college began in the year 1951 and every year this college prepare dynamic and dedicated teachers, who play very important role in uplifting the society. I am feeling delighted to see the continious progress being made by the this college.

I congratulate the Principal and all faculty of the college for their effort to take the institution to greater height. My heartiest wishes for its great success.

(Dr. Sunil Kant Mishra)

Dr. Anjana Srivastava
Principal
K.P. Training College,
Prayagraj

Prof. Pankaj Kumar
Dean of College Development

University of Allahabad
Allahabad (U.P.) 211 002, India

Message

It has been brought to my notice that K. P. Training College, Prayagraj is going to publish its annual magazine named **"Bhavya"**.

That college magazine is the mirror of any institution. It not only symbolises the energy & potential of stake holders but also signifies the ongoing momentum of the institution. I wish all the best for its success. I also thank the whole team & the Principal for their sincere efforts to make it happen a reality.

All the best.

(Prof. Pankaj Kumar)

Dr. Anjana Srivastava
Principal
K.P. Training College,
Prayagraj

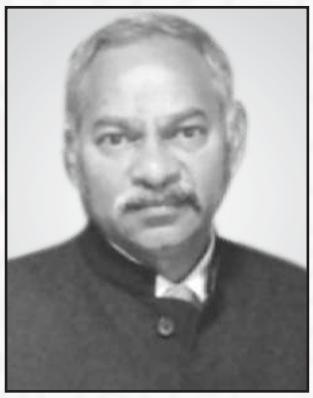

Ch. Raghvendra Nath Singh
Vice President

The ***Kayastha Pathshala***
12/4, Kamla Nehru Road,
Prayagraj (Allahabad)

Message

It is a matter of great pride for all of us that, like previous years, this year also the college is publishing its annual magazine **'Bhavya'** with its various activities and educational development. I would like to thanks the college for its continued efforts.

With heartiest wishes

(Ch. Raghvendra Nath Singh)

Dr. Anjana Srivastava
Principal
K.P. Training College,
Prayagraj

अभिलाषा गुप्ता 'नन्दी'
महापौर
प्रयागराज

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि आपकी संस्था के.पी. ट्रेनिंग कालेज, 12/12 कमला नेहरू रोड, प्रयागराज द्वारा विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अपनी पत्रिका **'' भव्य''** का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि आपकी संस्था द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिका **''भव्य''** से जन मानस लाभान्वित होंगे तथा आपकी संस्था जनमानस के लिए बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही है।

संस्था द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिका **''भव्य''** के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया

(अभिलाषा गुप्ता 'नन्दी')
महापौर

डॉ० अन्जना श्रीवास्तव
प्राचार्या
काली प्रसाद प्रशिक्षण महाविद्यालय,
प्रयागराज

कौशल किशोर श्रीवास्तव
कोषाध्यक्ष
के.पी. ट्रेनिंग कालेज
प्रयागराज

शुभकामना संदेश

यह हम सभी के लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका **''भव्य''** सत्र **2019-21** के संकलनार्थ अग्रसर है। विगत वर्षों की भांति प्रस्तुत वर्ष की पत्रिका भी महाविद्यालय के शैक्षिक तथा शैक्षिकेत्तर गतिविधियों का दर्पण साबित होगा।

मैं इस महाविद्यालय के चतुर्दिक प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

भवदीय

(कौशल किशोर श्रीवास्तव)

डॉ० अन्जना श्रीवास्तव
प्राचार्या
काली प्रसाद प्रशिक्षण महाविद्यालय,
प्रयागराज

बी०एड० मुख्य परीक्षा में सर्वोच्च अंक धारक

2019

आराध्य उपाध्याय

2020

आर्ची गौड़

2019-20 के छात्र प्रतिनिधि

शिवाङ्गी सूद
सीनियर प्रीफेक्ट
(तृतीय सेमेस्टर)

अमर नाथ
क्लास रिप्रेजेन्टेटिव
(तृतीय सेमेस्टर)

आर्ची गौड़
क्लास रिप्रेजेन्टेटिव
(तृतीय सेमेस्टर)

यशा हक
क्लास रिप्रेजेन्टेटिव
(प्रथम सेमेस्टर)

अनिल कुमार
क्लास रिप्रेजेन्टेटिव
(प्रथम सेमेस्टर)

उर्मि कुमारी
स्पोर्ट्स कैप्टन
(तृतीय सेमेस्टर)

प्रतिष्ठा यादव
सोशल सेकेट्ररी
(तृतीय सेमेस्टर)

कृष्णा रमन
सोशल सेकेट्ररी
(तृतीय सेमेस्टर)

श्वेता राय
जेण्डर चैम्पियन
(तृतीय सेमेस्टर)

सत्य प्रकाश विश्वकर्मा
जेण्डर चैम्पियन
(तृतीय सेमेस्टर)

2020-21 के छात्र प्रतिनिधि

रिया जायसवाल
सीनियर प्रीफेक्ट
(तृतीय सेमेस्टर)

सोनू शर्मा
क्लास रिप्रेजेन्टेटिव
(तृतीय सेमेस्टर)

सन्ध्या गौड़
क्लास रिप्रेजेन्टेटिव
(तृतीय सेमेस्टर)

अवन सोनकर
क्लास रिप्रेजेन्टेटिव
(प्रथम सेमेस्टर)

सीता राजावत
क्लास रिप्रेजेन्टेटिव
(प्रथम सेमेस्टर)

अतुल शर्मा
स्पोर्ट्स कैप्टन
(तृतीय सेमेस्टर)

ओम नाथ मिश्रा
सोशल सेक्रटरी
(तृतीय सेमेस्टर)

निशा मिश्रा
सोशल सेक्रटरी
(तृतीय सेमेस्टर)

जीतेश्वर कुमार
जैण्डर चैम्पियन
(तृतीय सेमेस्टर)

शिवानी मिश्रा
जैण्डर चैम्पियन
(तृतीय सेमेस्टर)

प्राचार्या की लेखनी से.....

किसी भी राष्ट्र एवं समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन शिक्षा है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा अध्यात्मिक शक्तियों का विकास करती है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कुमुदनी खिल जाती है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा रूपी प्रकाश से मानव जीवन कमल के समान खिल जाता है। शिक्षा प्रदान करने का यह उत्तरदायित्व एक कर्तव्यनिष्ठ एवं कर्मठ शिक्षक पर निर्भर करता है जो भावी पीढ़ी को उच्च आदर्शों, अभीष्ट आशाओं, उत्कण्ठ आकांक्षाओं, सनातन मूल्यों सतत् विश्वासों तथा प्राचीन परम्पराओं से युक्त अपनी सांस्कृतिक धरोहरों को हस्तान्तरित करते हुए प्रगति के पथ पर अग्रसर करता है।

यह महाविद्यालय सन् 1951 से अध्यापक शिक्षा के इस चुनौतीपूर्ण एवं दुरूह कार्य को पूर्ण निष्ठा एवं समर्पित भाव से करता आ रहा है। महाविद्यालय छात्राध्यापकों की आवश्यकताओं, क्षमताओं, रुचियों, वैयक्तिक विभन्नताओं को दृष्टिगत रखते हुए अनुशासित शैक्षिक वातावरण में श्रेष्ठ शिक्षण विधियों के साथ ही साथ शोधवृत्ति, विवेकशीलता, सृजनशीलता एवं कुशल अध्यापक के गुणों के सतत् विकास हेतु सदैव प्रयत्नशील है। मुझे यह कहते हुए अत्यन्त हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है कि महाविद्यालय के अनेको प्रशिक्षणार्थी पूरे भारत के विभिन्न स्थानों पर अध्यापन एवं अन्य प्रशासनिक पदों पर प्रतिष्ठित हैं और महाविद्यालय की गरिमा एवं कीर्ति को सर्वत्र सुवासित कर रहे हैं। मैं आशा करती हूँ कि भविष्य में भी यह महाविद्यालय ऊँचाईयों को छूता हुआ उर्वर प्रतिभा से युक्त सृजनशील, संयमी एवं शोधवृत्ति वाली प्रतिभाएं राष्ट्र निर्माण हेतु उत्पन्न करता रहेगा। मेरी शुभकामना है यह पत्रिका भविष्य में भी महाविद्यालय की शैक्षिक विरासत को आधार प्रदान करती रहेगी।

शुभेच्छाओं के साथ

प्राचार्या

स्काउटिंग-गाइडिंग शिविर की कुछ झलकियाँ

विवरणिका

सम्पादकीय	17
My College Journey	18
Most Valuable Things	18
Positive Attitude	19
Life is not for rest	20
"Job" Polor Bears met Penguins	20
Remember, Woman	21
We Begin	21
It All in Our Hands	22
What is Lilfe	22
Woman	22
संविधान दिवस	23
स्वाधीनता दिवस	23
शिक्षक दिवस के कुछ अविस्मरणीय पल	24
शैक्षिक भ्रमण	26
कर्तव्य	27
नादान परिंदा	28
ख्वाहिशें	29
शैक्षिक टूर	29
कोरोनाकाल और मजदूरों का पलायन	30
पतंग और डोर	31
संस्मरण-वास्तविकता कल्पना से परे	32
तब बनती है कविता	33
नारी शक्ति	34

इम्तिहान	34
आधुनिक युग में गाँधीवाद	35
जीवन नहीं मरा करता	36
दोस्ती	36
युवा और लोकतंत्र	37
खूबसूरत जीवन	38
हँसना जरूरी है	39
सपनों में रख आस्था	40
कलयुग की पक्षी	40
जिन्दगी-ए-सफर	41
चलो एक फूल लगाया जाए	42
पतन के नये कीर्तिमान छूती पत्रकारिता	43
करै के अहै चूल्हा चौका	44
समाचार पत्रों की नज़र से	46
Self Motivation and Success	48
Skill Development : An Indian Initiative	49
बालक के व्यक्तित्व विकास में वातावरण की भूमिका	51
Impact Of Pandemic On Professional Development Of Learner	52
Role Of Teacher's In Guiding Students To Manage Stress	53
वार्षिक आख्या : 2019-2021	55

सम्पादकीय.....

इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि किसी भी महाविद्यालय की पत्रिका उस महाविद्यालय की शैक्षिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का दर्पण होती है। छात्रों के शैक्षिक तथा साहित्यिक ज्ञान के संवर्धन तथा विकास की दिशा में यह पत्रिका मील के पत्थर के समान है जो उनकी शब्द शक्ति तथा नव सृजन की कला को एक वृहद आयाम प्रदान करती है। जिसके रूपान्तरण के लिए महाविद्यालय प्रति दो वर्ष के उपरान्त अपनी वार्षिक पत्रिका 'भव्य' का प्रकाशन करता रहा है। परन्तु विगत वर्ष ने कोविड-19 के कारण उत्पन्न संकट ने समस्त गतिविधियों पर विराम सा लगाते हुए हम सभी के समक्ष एक भीषण चुनौती उत्पन्न कर दी। परन्तु महाविद्यालय की प्राचार्या ने उस चुनौती को अवसर में बदलते हुए शिक्षण-अधिगम व्यवस्था के सुचारू संचालन की दिशा में ऑनलाइन माध्यम को अपनाने के लिए प्रेरित किया। ऑनलाइन माध्यम से कक्षाओं के संचालन के दौरान परिलक्षित कुछ तकनीकी विसंगतियों को देखते हुए आपने Microsoft Team की संकल्पना को महाविद्यालय की कक्षाओं के लिए मूर्त रूप प्रदान कर तकनीकी अवरोधों पर भी विजय श्री प्राप्त की, चूंकि छात्रों के सर्वांगीड़ विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाएं भी अनिवार्य है, इसलिए आपने न केवल शिक्षण वरन शिक्षणेत्तर गतिविधियों के संचालन में भी ऑनलाइन माध्यम का संवर्द्धन किया और आभासी मंच से ही विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करवायी।

यह महाविद्यालय प्रारम्भ से ही प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान कर न केवल उनका मानसिक तथा बौद्धिक वरन् शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक विकास कर उन्हें अपने जीवन के कैनवस पर अपनी सफलताओं के विभिन्न रंगों को भरने का स्वर्णिम अवसर प्रदान करता आ रहा है और भविष्य में भी अपने समस्त वांछित कर्तव्यों का सकुशलता के साथ निर्वहन करते हुए प्रशिक्षणार्थियों को उन्नत शिक्षा प्रदान कर सफलता के उन्मुक्त गगन में अपना तथा महाविद्यालय के यश का परचम लहराने का कार्य करता रहेगा, ऐसा हम सभी का विश्वास है।

प्रस्तुत पत्रिका को अन्तिम रूप प्रदान करने में हमारे अग्रजों तथा मार्गदर्शकों की महती भूमिका रही, जिनके प्रति मेरा आभार मेरा नैतिक दायित्व है। सर्वप्रथम मैं, हम सभी के मार्गदर्शक तथा प्रस्तुत पत्रिका के संरक्षक माननीय चौ. जीतेन्द्र नाथ सिंह जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनका सौम्य तथा ओजस्वी व्यक्तित्व हम सभी को अपना-अपना मंतव्य प्रस्तुत करने में सहज बनाता है और जिन्होंने समय-समय पर हमेशा महाविद्यालय के उन्नयन तथा उत्कर्ष हेतु अमूल्य सुझाव देते हुए हम सभी के मनोबल तथा हौसलें का संवर्धन किया।

मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ अपनी स्नेहिल प्राचार्या के प्रति, जिन्होंने अपने सहज तथा सरल सानिध्य में हम सभी को रखते हुए महाविद्यालय के पल्ल्वन एवं पुष्पन की दिशा को सतत् रूप से मुखारित होते रहने के मार्ग को प्रशस्त किया।

मैं कृतज्ञ हूँ अपने उन अग्रजों तथा शुभचिंतकों के प्रति, जिन्होंने अपने सन्देश के माध्यम से प्रस्तुत पत्रिका की सफलता के आयामों को सिद्ध किया। मैं आभारी हूँ अपने सम्मानीय शिक्षक साथियों के प्रति, जिन्होनें अपने सहयोगात्मक भाव से पत्रिका के प्रकाशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मेरी स्नेहिल कृतज्ञता समर्पित है मेरे उन प्रिय प्रशिक्षणार्थियों के प्रति, जिन्होंने अपनी बैद्धिक सम्पदा से प्रस्तुत पत्रिका के कलेवर को सुशोभित किया।

अन्ततः मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ प्रस्तुत पत्रिका के सम्पादन श्री रिशु साहू जी के प्रति, जिन्होंने पूरे मनोबल एवं मनोयोग से 'भव्य' पत्रिका को अन्तिम रूप प्रदान कर उसकी भव्यता में श्री वृद्धि किया।

डॉ0 (श्रीमती) शक्ति शर्मा
एसोशिएट प्रोफेसर
के.पी.ट्रेनिंग कालेज, प्रयागराज

My College Journey

A handful of wonder a spoonful of bewilderment and a pinch of anxiety was all I had when I took admission at K. P. Training College with mind pulling apart into diverse direction and everything in disarray, I decided to tread this path that I chose for myself (or rather, the other way round the path chose me).

The memory and vision of my first day at college still feels very fresh because I mentally revisit it quite often. My seat at the last bench, friends who were mere acquaintances back then and respected teachers who now seem like family everything now appears so surreal and enigmatic . The college atmosphere confused me with those qualities that I strived to attain, notably ,being punctual, being disciplined, being dedicated etc. to name just a few. One image that predominates among all is the vigour and enthusiasm that dominated me on every Friday to give my best and to learn the most from the opportunities that this institution is giving me today and which I know, I would never get in future.

The journey of these two years at **K. P. Training College** has been joyous, astounding prodigious and most importantly, metamorphosing because it has transformed my perception about things and made me a better person. The experiences that I had here were full of learning that would help me in all my future endeavours. The memories that I built here would always remain a room of solace for lifetime. Today I can say with certainty that I made the right decision by joining this institute and all the learning experiences that I had here will always remain with me as a guiding principle in going ahead in life.

Shivangi Sood
Sr. Prefect 2019

Most Valuable Things

Three things in life that
Once gone, never come back
Time, words and opportunity

Three things in life that
may never be lost
peace, hope and honesty.

Three things in life that
are most valuable
love, self confidence and friends.

Yogeshwar Saroj
Pupil teacher 3rd semester

Positive Attitude

Positive attitude is the result of positive thinking, positive ideas and coming with new solution. The way you think, day in and day out, effects all aspects of your life. Learning to listen to your 'internal voice' will help you recognize your thought patterns and also teach that how we handle our stressful situation of daily living.

Many people have found that, when they tune into their internal voice, much of it is negative thought like "I could never do that" and "what if I fail"? can seriously impact the way you behave.

Develop your positive attitude I here are some ways to help you develop a more positive attitude:- listen to internal voice. Divide one or more sheet of paper into two columns. For a few days, write down in the left column all the negative thoughts that come into your mind. Rewrite each thought in a positive way in the second column. Practise doing this in your mind until it becomes a habit.

For e. g.- " I will never get this finished by the end of the day! "could become, " I will probably get most of this finished by the end of the day !"

Learn to communicate. Not saying the things we feel can lead to sense of frustration, hurt, anger or anxiety. If you find communicating difficult or are afraid of arguments then without any waste of time, learn from the following Mountain story.

Mountain story- A n interesting short story

" A son and his father were walking on the mountains, suddenly, his son falls, hurts himself and scream : 'AAAHHHHH!!!'

To his surprise, he hears the voice repeating, somewhere in the mountain. ' AAAHHHHH!!!.

Curios, he yells : " who are you? "

He receives the answer : " Who are you ? "

And then he screams to the mountain : " I admire you! "

The voice answers " I admire you ! "

Angered at the response , he screams, " Coward ! "

He receives the answer' "Coward!"

He looks to his father and asks : " What's going on ? "

The father smiles and says : " you are a champion ! "

The boy is surprised, but does not understand.

Then the father explains : " People call this ECHO, but really this is life. "

It gives you back everything you say or do. Our life is simply a reflection of our action. If you want more love in the world, create more love in your heart. If you want more competence in your team, improve your competence.

This relationship applies to everything, in all aspects of life ; Life will give you back everything, in all aspects of life ; Life will give you back everything you have given to it. "

your life is not a coincidence. It's a reflection of you !

Aakriti Yadav
Pupil teacher 1st Semester

Life is not for rest

Life is not for rest,
It is only for text,
And We should do our best ,
And We should do our best.....
Future depends on our present ,
And We waste our present petty amusement ,
We should scrimp our time for our print ,
And we should do our best.....
It is the precious time of our life ,
A time of taking a change in ourselves ,
A time of dreaming and glowing ourselves ,
and we should do our Best.....

Km. Shweta Singh
Pupil teacher 1st Semester

"Job" Polor Bears met Penguins

You may have come across video games or story books featuring polar bears and penguins together. Do you know? in reality, these animals can not meet in the wild.

Why can't they meet? and if they cant'. why are they featured together? Let's find out.

Photographs and videos show polar bears and penguins invariably surrounded by ice. That's because polar bears and most penguins inhabit polar regions, which are dominated by ice cover. But you can never find them together in the wild.

And that's because they live two different poles, white polar beras are found in the Arctic near the North Pole, most species of penguins live in the Antarctic region near the south pole.

Which is why these two animals can never meet.

Rajesh Kumar Singh
Pupil teacher 1st Semester

Remember, Woman

Remember, Woman, you were born life giver, miracle creator, magic maker.
You were born with the heart of a thousand mothers
open and fearless and sweet.
You were born with the fire of queens & conquerors,
Warriors blood you bleed.
You were born with the wisdom of sages & shamans.
No wound can you not heal.
You were born the teller of your own tale, before none your should knees.
You were born with an immeasurable soul, reaching out past infinity.
You were born to desire with passions, abandon, and to name your own destiny.
Remember, Woman, your and grace, the depth of your deep sea heart.
Never forget you are woman, divine, as you have been from the start.

We Begin

We begin not by wanting to exist,
but by chance.
A complex dance of nature.
Nurtured. Take your
talk of fate and seek to make
more of your turn.
Learn what makes you tick,
because you don't have to stick
with what is presented;
pretending its your thing when it's not.
You got the power and it's within you.
So begin
Win your own definition of success and don't settel for less, as giving up only means you ensure that it will never happen.
Break the pattern.
If chance brought you here, you have nothing to fear by beginning.
So take a chance, and never stop swimming.
By wanting not just to exist,
We Begin.

Bhavya Yadav
Pupil teacher 1st Semester

It All in Our Hands

Our would in our hands
It in great danger today
Be cauuse of our stranger ways.
Plastic bags are one of the causes
For the destruction here.
The ozone layer is getting thinner.
This is our main fear
Pollution of water
Is very harmful fore fish.
Drinking clean and pure water.
Isn't this our wish
Smoke-smoke and smoke around.
This is what pollutes the air
It give rise to diffeerent diseases
Do we really care.
We feel that what we do.
Is just a single grain of sand
but wouldn't there be a big difference
For the people living in our land.
Lets make our would
A pollution free land
And I want to remind you
That the would is in our hands.

Kirti Chandra
Pupil teacher 1st Semester

What is Lilfe

A Businessman burst into laughter and said
"Money is life"
A Poor man trembling with cold said
"Life is struggle"
A Old man dreaming is his sleep said
"Life is a bed of roses"
A Young man enjoying his time in full pleasure Said
"Life is a full of pleasure"
A Holy man in his speech said
"Life is only a way to reach the god"
But I say :-
"Life is a golden chance to get success in the world"

Siddharth Jaiswal
Pupil teacher 1st Semester

Woman

Don't imaging a woman is weak
She must have a right to speak.
She is equal to all.
She will never let her image fall
She is in a high place today of.
Doctors, Soldiers, Scholars
A woman is a mother, a friend and a wife.
She is the one who gives us life.
She is God's creation, She can build nation

Kirti Chandra
Pupil teacher 1st Semester

कुछ गौरव पूर्ण क्षण.....

संविधान दिवस

स्वाधीनता दिवस

शिक्षक दिवस के कुछ अविस्मरणीय पल

HAPPY
TEACHER'S
DAY

HAPPY
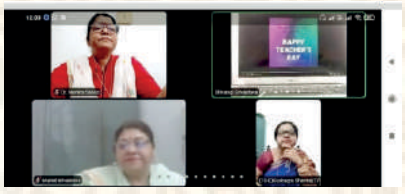
HAPPY
TEACHER'S
DAY
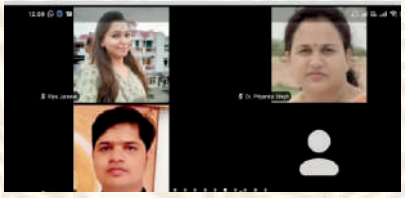

TEACHER'S

Dr. Namita Sahoo
(10-C)Kushagra Sharma(17)

DAY

शैक्षिक भ्रमण

.....कर्तव्य

(लॉकडाउन के समय घटित घटना का सजीव चित्रण)

''.....वो आया था उम्मीदों के द्वार पर एक रोटी का निवाला मांगने,
किसी अनजान से अपनी क्षुधा की एक खुराक को साधने,
मगर उम्मीदों का दिया उसका यूँ ही एक पल भी ना जल सका,
पेट भर कर खा रहे थे लोग मगर भूखे पेट को कोई एक निवाला भी न दे सका.....।
वो भटकता रहा यूँ ही पूरे गाँव मे हर गली में, हर द्वार में,
सारे दिन सारी दुपहरिया और फिर मद्धिम सांझ में,
.....तब कहीं वो जुटा पाया था एक वक्त की खुराक
तभी उसको खोजते आये दो बच्चे लेकर ढ़ाक के पात.....।
उस उदार हृदय ने फिर ना सुनी अपने उदर की व्यथा,
फिर वह असीम चिर शांति अनुभव कर रहा था
था तो भूखा मगर उदर को झूठी सांत्वना दे रहा था.....।
.....कि अभी तो पूरी रात बाकी है, जीने की आशा बाकी है,
जी भर कर ठण्डा नीर पी तू, यूं ही छोड़ ना उम्मीद तू,
तभी किसी ने थमा दी उसके हांथों में दो सूखी रोटियां
एक खाकर वह दूसरी झोले में रख लिया.....।
पथिक ने पूछां तुमने क्यो नहीं खायी दूसरी रोटी,
उसने कहा उस पर हक है उसका जिसके संग जीने मरने की कसम ली,
मैं हतप्रभ हांथ बांधे उसके सामने यूं ही मूरत बनकर खड़ा रहा,
है परिस्थिति कितनी कठिन फिर भी यह कर्तव्य कैसे निभा रहा.....।
दो रोटियों के बदले वह अनगणित दुआएं देकर चला गया,
शून्य से आकाश में नवदीप्त बनकर कहीं खो गया,
न जाने क्यों निकल आयी थी आंखों के कोरों पर दो बूँदे
शायद वो जीवन का मूलमंत्र मुझे सिखा गया.....।।''

सत्यप्रकाश विश्वकर्मा
छात्राध्यापक तृतीय सेमेस्टर

नादान परिंदा

एक परिंदा नादान-सा
आँखों में ख्वाबों के सैलाब
लिए ख्वाहिशें हजार
वो बेखौफ बढ़ता ही जा रहा था सफर पर
मगर सही रास्ते से अनजान सा।

उसे कुछ बड़ा करना था
जमाने से कुछ अलग
मगर क्या?
इस सवाल का जवाब भी एक सवाल था।
उसकी मंजिल तो थी
मगर धुंधली सी।

इसी कश्मकश में जा पहुँचा
वो एक अन्जान से शहर में
उस शहर में वो जैसे कैद सा हो गया
वहाँ की फिजा उसे कुछ रास नहीं आई।

बांध दिया उस शहर ने
उसकी बेफ़िक्र उड़ान को
जिम्मेदारियों के धागे से।

वो भागता रहा ताउम्र जिन चीजों से
उसने आखिरकार वहाँ उन सब का सामाना किया
वो जब लड़खड़ाया
तो उसे हर बार सम्भाला गया।
जितनी बार गिरा
उतनी बार उठाया गया
मगर हारना कभी न सिखाया गया।

उस शहर की कैद
अब उसे कैद न लगती थी
उसे तो अब,
उस शहर से प्यार था।
उस अनोखे से शहर ने
उसमें तब्दिलियाँ हजार कर दिया
उसकी काबिलियत
अब उसके व्यक्तित्व में झलकती थी
धुँधली सी थी जो मंजिल
अब स्पष्ट सी दिखती थी।

वो उलझन में था
इस शहर में आकर
मगर रो पड़ा
जब जाने की बारी आई।

वो परिन्दा के.पी.ट्रेनिंग कॉलेज का हर एक छात्र है,
और वो शहर हमारा कॉलेज।

सन्ध्या गौड़
छात्राध्यापिका तृतीय सेमेस्टर

''ख्वाहिशें''

ख्वाबों का आसमां तक उड़ान है ख्वाहिशें,
जमीं से चाँद को छूने का ख्याली पुलाव है ख्वाहिशें,
बिन पंख दूरतलक उड़ जाने का अरमान है ख्वाहिशें,
अदक्ष के पंखों में ऊर्जा का संचार है ख्वाहिशें,
लड़खड़ाते पैरों का आधार है ख्वाहिशें,
पग-पग चुभते काँटों पर चलने का अंदाज है ख्वाहिशें,
गड्ढे में गिरकर जमीं पर आने का एहसास है ख्वाहिशें,
गंतव्य तक पहुँच कर, दिल का सुकून है ख्वाहिशें,
सपनों के महल की नींव है ख्वाहिशें,
रात के अँधेरे में रोशनी की एक किरण है ख्वाहिशें,
समदंर के लहरों से टकराने का हौसला है ख्वाहिशें,
आरम्भ के चरण से अंत तक जाने का सबब है ख्वाहिशें,
बारिश की बूँदों सी अनगिनत है ये ख्वाहिशें,
आकाश के अनंत छोर सा अपार है ख्वाहिशें ।।

अर्चना यादव
छात्राध्यापिका तृतीय सेमेस्टर

शैक्षिक टूर

हम सबने किया फैसला जाने का इक शैक्षिक टूर ;
हुआ चुनाव किला चुनार का, जिसके दक्षिण है कैमूर
यह है अवस्थित शहर चुनार में, जिसका जनपद मिर्जापुर
था बना काल में विक्रमादित्य के, जगजाहिर जिसका शूर
पर, है निशां अंग्रेजों तक के , जो थे हवस में बिल्कुल चूर
हम सबने किया फैसला जाने का इक शैक्षिक टूर।

किवदन्ती बताती इसे, केन्द्र हिन्दूशक्ति का,
जिस पर पड़ा था पहला पग, वामनरुपी सुर का
यह बना है पंजे के आकार का,
है पखारती जिसे निर्मल गंगा माँ,
हम सबने किया फैसला जाने का इक शैक्षिक टूर।

चूँकि, इतिहास समेटे किला चुनार का, है प्रयाग से दूर,
सो, बस में हम सब किये मस्ती भरपूर
जिससे रहा न कोई यात्री दूर
गायन-वादन व नृत्य में सब हुए थे, बिल्कुल चूर
हम सबने किया फैसला जाने का इक शैक्षिक टूर।

था कुशल नेतृत्व सीनियर्स का, सो हुआ यह सकुशल पूर,
हम-सब जूनियर्स हैं, सो रहे भार से थोड़ा दूर,
शिक्षक-गण के निर्देशन और नियंत्रण थे,
जिससे हुआ न कुछ भी काफूर
हम सबने किया फैसला जाने का इक शैक्षिक टूर।

निशा मिश्रा
छात्राध्यापिका तृतीय सेमेस्टर

कहानी

''कोरोना काल और मजदूरों का पलायन''

फर्श पर लेटा हुआ रजत बड़े असमंजस में था वह सोच रहा था कि यह काम करे या न करे.....उसके पास दूसरा कोई चारा भी नहीं था। खुद को समझाते हुए वह अपने कमरे से बाहर निकला और उस कमरे की बढ़ने लगा जहाँ पहले से एक साइकिल खड़ी थी, कमरे का दरवाजा खुला था। रात का समय था, अंदर से डरा हुआ रजत कांपते हुए हाथों से कमरे के दरवाजे को खोला और बिना आहट किये अंदर घुस गया। वह कमरा उसके मालिक का था, जहाँ वह काम करता था। अंदर आलमारी पर रखे पैसे और दीवार पर टंगी साइकिल की चाभी को लेकर जैसे ही कमरे से बाहर निकल रहा था.....उसकी अंर्तआत्मा अंदर से उसे कचोटने लगी.....वह आज खुद की ही नजरों में चोर बन गया, इसलिए जाने से पहले उसने मालिक को एक पत्र लिखना ठीक समझा। पत्र लिखकर वह कमरे से बाहर निकल गया.....रजत एक ईमादार व मेहनती मजदूर था। दिल्ली में वह पैसे कमाने आया था, उसे आये लगभग एक साल हो चुके थे। इस बार वह घर जाने की तैयारी में था। वह बाप जो बनने वाला था....तभी कोरोना महामारी के बढ़ते मामलों को देखते हुए भारत सरकार ने पूरे देश में लॉकडाउन लगा दिया। मानो इस खबर से रजत की खुशी पर ही जैसे लॉकडाउन सा लग गया। वह अब अनलॉक होने का इन्तजार करने लगा था कि तभी एक दिन रजत के फोन पर उसकी पत्नी का कॉल आया। कॉल उठाने पर उसकी पत्नी बोली, ''आप जल्दी से घर वापस आ जाओ, मेरी तबियत ठीक नहीं है।'' यह सुन रजत और भी परेशान हो गया लेकिन अपनी परेशानी को छिपाते हुए बोला ''ठीक है, तुम परेशान मत हो, मैं जल्द ही घर आ जाऊँगा, वैसे भी ये लॉकडाउन तो कुछ ही दिनों का है।'' तभी सरकार ने दूसरे लॉकडाउन की भी घोषणा कर दी.....

रजत के वहाँ से रात में ही निकलने के बाद अगली सुबह मालिक जब उठा तो उसकी नजर आलमारी पर से गायब पैसे पर पड़ी, वहाँ से पैसा गायब था, मालिक ने अपना पूरा कमरा छान मारा लेकिन उसे पैसे तो नहीं मिले लेकिन एक कागज मिला, जिस पर कुछ लिखा हुआ था–

''नमस्ते मालिक,

मैं आपके पैसे और साइकिल लेकर जा रहा हूँ, हो सके तो मुझे माफ कर देना क्योंकि घर जाने के लिए मेरे पास कोई साधन नहीं है। मेरी गर्भवती पत्नी की तबियत बहुत खराब है। मुझे बरेली तक जाना है।

आपका कसूरवार
एक यात्री
मजदूर एवं मजबूर
रजत

यह पत्र रजत ने अपने मालिक को लिखा था। इस पत्र पढ़ने के बाद मालिक की आँखे भर आयी.....

उधर धीरे-धीरे ही सही लेकिन रजत अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहा था। रात से दिन और सूरज सिर पर चढ़ गया लेकिन...रजत को भूख-प्यास की कोई सुध न थी वह लगातार साइकिल चलाये जा रहा था; दिल्ली से बरेली लगभग 300 किमी0 का सफर वह तय करके उसका शरीर पूरी तरह से थक चुका था उसमें अब और हिम्मत नहीं बची थी लेकिन जब उसे अपना गांव दिखाई दिया तो न जाने कहाँ से उसके शरीर में ऐसी ऊर्जा का संचार हुआ कि धीमी पड़ रही उस साइकिल की रफ्तार अचानक से

तेज हो गई और रजत के चेहरे पर खुशी की लहर सी दौड़ गयी।

तभी अचानक.....रजत बेहोश होकर जमीन पर जा गिरा। उधर से गुजर रहे कुछ लोगों ने उसे जमीन पर गिरा देखा तो वे उसके पास गए लेकिन उन लोगों ने रजत के पास पहुँचने में देर कर दी.... रजत बहुत दूर जा चुका था, बेहोश होने के बाद दोबारा होश में न आ सका....

शिवानी मिश्रा
छात्राध्यापिका तृतीय सेमेस्टर

पतंग और डोर

भारत में प्रत्येक वर्ष 14 जनवरी को मकर संक्रान्ति (पतंग उत्सव) के रूप में मनाया जाता है। एक बार एक व्यक्ति अपने बेटे के साथ पतंग उत्सव में गया। वहाँ लोग रंग-बिरंगी पतंगे उड़ा रहे थे। आसमान में उड़ती रंग-बिरंगी पतंगों को देख कर बेटा का भी मन पतंग उड़ाने के लिए मचल उठा।

उसने अपने पिता से कहा, ''पापा, मैं भी पतंग उड़ाना चाहता हूँ, प्लीज मेरे लिए एक पतंग खरीद दीजिए।''

बेटे की इच्छा पूरी करने के लिए पिता ने पास की एक दुकान से एक सुन्दर पतंग व डोर खरीद दी। बेटा पतंग पाकर बहुत खुश हुआ और खुशी से झूम उठा।

कुछ देर बाद वह भी डोर थामें पतंग उड़ा रहा था। उसकी पतंग ऊँचे आसमान में उड़ रही थी। लेकिन वह खुश नहीं था, वह चाहता था कि उसकी पतंग और ऊँची उड़े। वह पिता से बोला- ''पापा, ऐसा लग रहा है कि डोर की वजह से पतंग ऊँची नहीं उड़ पा रही है। क्यों न इसकी डोर काट दी जाय? इससे पतंग आजाद होकर और भी ऊँची उड़ने लगेगी। प्लीज, आप इसकी डोर काट दो।''

बेटे की बात मानकर पिता ने पतंग की डोर काट दी। डोर काटते ही पतंग ऊपर जाने लगी। यह देखकर बेटा कहुत खुश हुआ। लेकिन कुछ देर बाद पतंग ऊपर जाने के बजाए नीचे आने लगी और एक मकान की छत पर जा गिरी। बेटा यह देख हैरत में पढ़ गया। उसने यह सोचकर पतंग की डोर काटी थी कि पतंग आसमान में और ऊंचा उड़ने लगेगी, लेकिन वह तो नीचे गिर पड़ी। उसने पिता से पूछा– ''पापा, ये क्या हुआ? पतंग आसमान में और ऊँची जाने के बजाय नीचे क्यों गिर पड़ी ?''

पिता बोला– बेटा ! तुम्हे लग रहा था कि डोर पतंग को ऊँचा उड़ने से रोक रही है, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं था। डोर तो पतंग का सहारा थी। हवा की गति अनुसार तुम डोर खींचकर तो पतंग का सहारा थी। हवा की गति अनुसार तुम डोर खींचकर या ढील देकर पतंग को ऊँचा उड़ने में मदद कर रही थी। लेकिन जब डोर रुपी सहारा कट गया तो पतंग को मदद मिलनी बंद हो गयी और वह नीचे गिर पड़ी। ऐसा जीवन में भी होता है। जीवन की ऊँचाईयों पर पहुँचकर हमें लगने लगता है कि परिवार, रिश्ते और दोस्त हमें बाँध रहे हैं और सफलता के शिखर पर पहुँचने से रोक रहे हैं । जबकि हम भूल जाते है कि हमें ऊँचाइयों पर ले जाने वाली डोर है उनके नैतिक बल के बिना सफलता की उड़ान मुश्किल है।बेटे को गलती समझ आ गई।

जितेश्वर कुमार
छात्राध्यापक तृतीय सेमेस्टर

संस्मरण - वास्तविकता कल्पना से परे

एक बार की बात है मेरे घर के बाहर एक कुत्ता रहता था जो कि मुझसे परचा था। जब मैं घर से बाहर जाती वह पूँछ हिलाकर आगे-पीछे खेलने लगता था। खेल-खेल में ही उसके दाँत मेरे पैर में लग गये और रक्त बहने लगा। तभी पापा ने देखा और आकर बोले कि कल चलकर एंटी रैबीज का इंजेक्शन लगवा देगें। अगले दिन सुबह मैं और पापा तैयार होकर घर के निकट स्थित सरकारी बेली अस्पताल में पहुँच गये। सबसे पहले पापा ने काउण्टर से मेरे नाम का पर्चा बनवाया और फिर हम लोग परचे में लिखे कक्ष संख्या के बाहर जाकर खड़े हो गये। एक-एक करके लोग आते जा रहे थे, मैं भी खड़ी सभी को देख रही थी। लेकिन डॉक्टर साहब अभी तक नहीं आये थे। तभी अचानक से एक व्यक्ति पर मेरी नजर पड़ी जो कि बहुत ही अजीब वेश-भूषा बनाएं हुए था और धीरे-धीरे हम लोगों की तरफ बढ़ रहा था। उसके कपड़े गंदे-फटे थे, बाल भी गंदे थे और अपने ही कुछ बड़बड़ता हुआ बाकर मरीजों की लाइन में खड़ा हो गया। तभी वहाँ खड़े लोग उसे पागल-पागल कहते हुए तथा कोई गाली देकर कहने लगे कितुम यहाँ क्यों आये हो, जाओ यहाँ से बाहर और लोग उसका मजाक उड़ाने लगे कि पागल भी इलाज कराने आया है। मैं चुपचाप खड़ी सबकुछ देख रही थी। तभी वह व्यक्ति झल्लाकर बोला, साथ ही गाली देते हुए कि उड़ा लो मजाक, मेरा मजाक तो जिन्दगी ने उड़ाया है, तुम लोग भी उड़ा लो.....।

इसके बाद सब शांत हो जाते हैं और उससे पूछते है कि आखिर ऐसा तुम क्यों कह रहे हो...? तब वह व्यक्ति बताना शुरू करता है कि किस प्रकार आज वह इस दयनीय स्थिति में पहुँच गया।

सर्वप्रथम वह बताता है कि मैंने फलां सन् इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक किया है। तभी अचानक से वह अंग्रेजी सभ्यता की प्रतीक अंग्रेजी भाषा बोलने लगता है। सभी लोग चुप होकर उसकी बातें सुन रहे थे और मैं भी। फिर वह आगे कहता है किमेरी शादी हो गयी थी, दो जवान बच्चे, एक लड़का और एक लड़की थी। फला-फूला परिवार था मेरा। एक दिन अचानक सड़क दुर्घटना में में मेरे दोनों बच्चों की मृत्यु हो जाती है, इस कारण से उसकी पत्नी मुदिता गहरे शोक में चली जाती है और कुछ समय बाद उसकी भी मृत्यु हो जाती है। इन दर्दनाक मौतों के आघातों को मेरा मस्तिष्क झेल नहीं पाता और इस कारण मुझे मानासिक रोग हो जाता है। मैं अपने से ही बाते करने लगता था।, किसी चीज की सुध नहीं रहती थी। स्थिति दिन-प्रतिदिन खराब होती जा रही थी। हम सभी लोग चुप थे और आश्चर्यपूर्वक उसकी बातों को सुन रहे थे।

फिर वह बताता है कि उसके भाईयों ने रुपया-पैया सबकुछ लेकर उसे घर से बाहर निकाल दिया और सड़कों पर दर-बदर भटकने के लिए मजबूर कर दिया, और इसी कारण पागलों की वेश-भूषा से युक्त मैं आज यहाँ तुम लोगों के सामने खड़ा होकर मजाक का पात्र बन रहा हूँ। अंत में वह व्यक्ति सबसे पूछता है बताओं इसमें मेरा क्या दोष था...? बताओ इसमें मेरा क्या दोष था...?

सोनम
छात्राध्यापिका तृतीय सेमेस्टर

तब बनती है कविता

वैज्ञानिक दृष्टिकोण, दार्शनिक अंदाज हो,

तब बनती है कविता।

प्रेम की अनुभूति, विरह का संताप हो,

तब बनती है कविता।

बाहर शांति, भीतर तूफान हो,

तब बनती है कविता।

यथार्थ पर पकड़, विचारों की काल्पनिक उड़ान हो,

तब बनती है कविता।

साहित्यिक अभिरुचि, भाषा का ज्ञान हो,

तब बनती है कविता।

प्राचीनता के आहार में आधुनिकता स्वादानुसार हो,

तब बनती है कविता।

शब्दों में सादगी, वाक्यों में अलंकार हो

तब बनती है कविता।

विचारों में मौलिकता, सृजनात्मक कलाकार हो,

तब बनती है कविता।

संस्कृति का ज्ञान, निष्पक्षता का दृष्टांत हो,

तब बनती है कविता।

सौन्दर्या गोस्वामी
छात्राध्यापिका तृतीय सेमेस्टर

नारी शक्ति

मैं सच कहता हूँ बात बहुत संगीन बताने वाला हूँ
मैं नारी शक्ति का किस्सा रंगीन बताने वाला हूँ
मैं शब्दों से नारी शक्ति का जाल बिछाने वाला हूँ।
मैं बिन दहेज मारी दुल्हन का हाल बताने वाला हूँ
मैं बुझी हुई राखों में फिर से आग लगाने वाला हूँ
मैं नारी को नारी शक्ति का पाठ पढ़ाने वाला हूँ।।
मैं नारी को नारी शक्ति का पाठ पढ़ाने वाला हूँ।।

मैं पिंजरे वाले पंछी को आजाद कराने वाला हूँ
नारी युग का नूतन प्रभात आबाद कराने वाला हूँ
मैं गौहर को भी माता वाला प्यार बताने वाला हूँ
मैं रण में अर्जुन को गीता का सार बताने वाला हूँ
मैं लव-कुश के गीतों का गायन फिर दोहराने वाला हूँ
मैं नारी को नारी शक्ति का पाठ पढ़ाने वाला हूँ।।
मैं नारी को नारी शक्ति का पाठ पढ़ाने वाला हूँ।।

नारी तुम भूली कैकेयी, तुम भूली हो कौशल्या को,
तुम भूली मीरा का गायन, तुम भूली अमर अहिल्या को
तुम भूल गई हो झांसी वाली रानी की मर्दानी को
तुम भूल गई शायद हाणी रानी वाली कुर्बानी को
तुम भूल गई दुर्गा, लक्ष्मी, तुम भूली मानस पुत्री को
तुम भूल गई हो रति रंमा को, तुम भूली हो सावित्री को
तुम भूल गई हो इतिहासों में पायल की ललकारों को
तुम भूली हो हाथों की टूटी चूड़ी के खनकारों को
तुम भूल गई परिभाषा जीजाबाई के आदर्शों की
तुम भूली हो मतलब रजिया के शासन वाले वर्षों की
तुम भूल गई शायद राधा के सपनों के अरमानों को,
तुम भूली रावण के घर में सीता जी के स्वाभिमानों को
तुम भूल गई पद्मिनियों की जौहर वाली बलिदानों को
तुम भूली दासी पन्ना की बेटों वाली कुर्बानी को
तुम भूली हो अपना यथार्थ मैं उसे जगाने निकला हूँ
मैं इतिहासों के पन्नों को फिर से दोहराने निकला हूँ
मैं नारी को नारी शक्ति का पाठ पढ़ाने वाला हूँ।।
मैं नारी को नारी शक्ति का अध्याय पढ़ाने वाला हूँ।।

अंशू जायसवाल
छात्रध्यापक प्रथम सेमेस्टर

इम्तिहान

जीवन संघर्ष का एक इम्तिहान है।
प्रत्येक क्षण, हर पल, पथ में शूल है।
संघर्ष से घबरा कर, कदम कभी रोकना नहीं।
ललकार कर बता दो, इसी क्षण समाज को।
संघर्ष के डर से, कभी घबराते नहीं।
जीवन संघर्ष का एक इम्तिहान है।

जीवन संघर्ष की एक फुलवारी है।
जिसे मानव ही सींचता है,
पालता है, पोसता है, बड़ा करता है।
पर उसी के साथ खेलता है।
समय आने पर तोड़कर फेंक देता है।
जीवन संघर्ष का एक इम्तिहान है।

जिसने जीवन में संघर्ष किया
पायी है जीवन में खुशी
आंसू बन गए हँसी का राज।
कह लाने को यह बड़ा है काम
ठोकर खाकर गिरना तो आसान है,
पर गिरकर उठना है बड़ा मुश्किल
जीवन के पग-पग पर चलना संभलकर
क्योंकि जीवन के हर मोड़ पर
इम्तिहान है।

सिद्धार्थ जायसवाल
छात्राध्यापक प्रथम सेमेस्टर

आधुनिक युग में गाँधीवाद की प्रासंगिकता

महात्मा गाँधी के विचार, दर्शन और संदेश वर्तमान के लिए बहुत सार्थक है। हमें कहना चाहिए कि वे ही तो एक धनात्मक तत्व है जो आधुनिक सभ्यता को सर्वनाश से बचा सकते हैं। स्थायी मान्याताएं जैसे स्व से पूर्व सेवा, संचय से पूर्व त्याग और दूसरों के लिए चिंता बहुत तेजी से समाप्त होती जा रही है और उनका स्थान स्वार्थपरता, लालच, अवसरवाद, धोखा, चालाकी और झूठ के द्वारा लिया जा रहा है। इस प्रकार के वातावरण में गाँधीवाद ही एक आशा की किरण प्रस्तुत करता है। गाँधी जी के मूल्य एवं सिद्धान्त, आदर्श एवं उपदेश मानवता को आंतरिक वाह्य अमर शांति की मंजिल तक पहुँचने के लिए दिशा प्रदान करते हैं। सत्य के साथ गाँधी जी के प्रयोगों ने उनके इस विश्वास को पक्का कर दिया है कि सत्य की सदा विजय होती है। सही रास्ता सत्य का रास्ता ही है। गाँधी जी का अहिंसा में विश्वास है। वास्तव में अहिंसा गाँधी दर्शन का आधार स्तम्भ है।

गाँधी जी की अद्वितीय देन है कि उन्होने पूँजीवाद और समाजवाद का समन्वय किया। उनके ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त का यह लक्ष्य है। गाँधी जी अमीरों से धन छीनकर गरीबों में बाँटने में विश्वास नहीं रखते थे। वे अमीरों के फालतू धन को अमीर द्वारा ही समाज में ट्रस्ट में रखना चाहते थे। गाँधी जी का यह विश्वास आज कल बहुत सार्थक है क्योंकि मार्क्स के प्रकार की स्थापना या पूँजीवाद को नष्ट करना संभव नहीं है। ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त समाजवाद और पूँजीवाद के बीच का रास्ता है।

गाँधी जी का राष्ट्रवाद और अन्तर्राष्ट्रीयतावाद पर विचार आज बहुत प्रबल और सार्थक है। आज की दुनिया में अन्तर्राष्ट्रीयतावाद का विचार कमजोर पड़ रहा है। हमें राष्ट्रवादी इसलिए होना चाहिए कि जिससे अन्तर्राष्ट्रवादी बन सके। गाँधी जी का यह विचार विश्व में बढ़ते हुए शस्त्रों की दौड़, राष्ट्रों के बीच तनाव, परमाणु धमकी देने की नीति जैसी समस्याओं पर आज भी प्रासंगिक है।

गाँधी जी के शिक्षा सम्बन्धी विचार भी आज बहुत प्रासंगिक है। यह सही है कि कई विचारों का सम्पूर्ण रूप से क्रियान्वयन नहीं किया जा सकता है किंतु शिक्षा के सम्बन्ध में बनने वाली नीतियों और कार्यक्रमों में इन विचारों की आत्मा को लागू किया जा सकता है। 'अध्ययनशील रहते हुए जीविका कमाओं' जो कि उनकी बुनियादी शिक्षा का केन्द्रीय सिद्धान्त है आज भी हमारी शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। शिक्षा के पाठयक्रम में व्यवसायिक कोर्स का लागू किया जाना गाँधी जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की देन है।

इस प्रकार हम देखते है कि गाँधीवाद आज बहुत सार्थक है। हमें तथ्य स्वीकार करना पड़ेगा कि गाँधीवाद का प्रचार-प्रसार एवं अभ्यास ही हमारी सभ्यता को बुराईयों एवं ऋणात्मक प्रवृतियों से मुक्त कर सकता है।

सौरभ यादव
छात्राध्यापक प्रथम सेमेस्टर

जीवन नहीं मरा करता

छिप-छिप के अश्रु बहाने वालों, मोती व्यर्थ लुटाने वालों
कुछ सपनों के मर जाने से, जीवन नहीं मरा करता है।
सपना क्या है, नयन सेज पर
सोया हुआ आँख का पानी
और टूटना है उसका ज्यों
जागे कच्ची नींद जवानी
गीली उमर बनाने वालों, डूबे बिना नहाने वालों
कुछ पानी के बह जाने से, सावन नहीं मरा करता है।
माला बिखर गयी तो क्या है
खुद ही हल हो गयी समस्या
आँसू गर नीलाम हुए तो
समझो पूरी हुई तपस्या
रूठे दिवस मनाने वालों, फटी कमीज सिलाने वालों
कुछ दीपों के बुझ जाने से, आँगन नहीं भरा करता है।
खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी
जैसे रात उतार चाँदनी
पहने सुबह धूप की धोती
वस्त्र बदलकर आने वालों, चाल बदलकर जाने वालों
चन्द खिलौनों के खाने से बचपन नहीं मरा करता है।
लाख बार गगरियाँ फूँटी
शिकन न आई पनघट पर,
लाखों बार किश्तियाँ डूबी
चहल-पहल वो ही है तट पर
तम की उमर बढ़ाने वालों, लौ की आयु घटाने वालों
लाख करे पतझड़ कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है।
लूट लिया माली ने उपवन
लुटी न लेकिन गंध फूल की
तूफानों तक ने छेड़ा पर
खिड़की बंद न हुई धूल की
नफरत गले लगाने वालों, सब पर धूल उड़ाने वालों।
कुछ मुखड़ों की नाराजी से दर्पन नहीं मरा करता है।

हरिओम धर द्विवेदी
छात्राध्यापक प्रथम सेमेस्टर

दोस्ती

जिन्दगी की शुरूआत होती है दोस्ती,
जिन्दगी का अंत होती है दोस्ती।

पता नहीं बक किसको आबाद कर दे दोस्ती,
पता नहीं कब किसको बरबाद कर दे दोस्ती।

खुशियों के फूल खिलाती है दोस्ती,
तो खून के आंशू भी रुलाती है दोस्ती।

कभी अपना कहकर बुलाती है दोस्ती,
कभी धोखे दे जाती है दोस्ती।

कभी जन्नत बनती है दोस्ती,
कभी यार की जिन्दगी कब्र में दफन कर जाती है दोस्ती।

योगेश्वर सरोज
छात्राध्यापिका तृतीय सेमेस्टर

युवा और लोकतंत्र

वैसे तो मैं और आप इस स्तर पर आ चुके हैं कि हम लोकतंत्र का अर्थ समझते है, फिर भी एक बार अब्राहम लिंकन के शब्दों में इसे पुनः स्मरण कर लेते हैं, लोकतंत्र अर्थात् जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा शासन, यानि जनता ही सर्वेसर्वा है। आज इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक के भारत में जहाँ 35 प्रतिशत आबादी युवा है, उसमें हम युवाओं की क्या भूमिका है और क्या भूमिका होनी चाहिए। क्या लोतंत्र का यही अर्थ है कि हम पूर्वाग्रहों से प्रेरित होकर मतदान कर दें और यही हमारे कत्तव्यों की इतिश्री है? एक युवा का दायित्व क्या होना चाहिए? क्या मात्र सरकारी नौकरी की तलाश.....

एक युवा उर्जा का स्रोत होता है वह इस लोकतंत्र को मजबूत बना सकता है। इस लोकतंत्र में मुझे कहीं कमी नहीं दिखती, इस संविधान में मुझे कमी नहीं दिखती कमी है तो इसे लागू करने वालों में, जो इसे जमीनी स्तर पर लागू करने में विफल रहें। मैं कोई वामपंथी नहीं हूँ, ना ही मैं किसी क्रांति की बात कर रहा हूँ। मैं मात्र युवाओं के नैतिक दायित्व की बात कर रहा हूँ। जो इस राष्ट्र के विकास में सहायक हैं।

आज तक युवा वर्ग मात्र सरकारी नौकरी की तलाश में मस्त रहा और अपने युवावस्था की समाप्ति तक में वो इसमें सफलता भी प्राप्त कर लेता है लेकिन उसे यहाँ पर रुक नहीं जाना चाहिए बल्कि आगे बढ़कर लोकतंत्र में अपनी सहभागिता बढ़ाना चाहिए। युवाओं की इस लोकतंत्र में अति महतवपूर्ण भूमिका है। जैसे एक बहुमंजिली इमारत में नींव की होती है, कुछ ऐसी ही स्थिति युवा वर्ग की इस लोकतंत्र में है।

स्थिति बदलने के लिए और लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए युवाओं को घर से बाहर निकलने की जरूरत नहीं, धरना-प्रर्दशन में शामिल होने की जरूरत नहीं, किसी भी घटिया विचारधारा वाले संगठन में शामिल होने की जरूरत नहीं।

युवाओं को अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्त्तव्यों के प्रति भी जागरूक होना चाहिए। उन्हें जाति, धर्म, पंथ के विभाजन में न बँट के राष्ट्रहित के लिए अपने प्रतिनिधियों को चुनना होगा। गलत को गलत कहने की हिम्मत और सही के साथ खड़े रहने की हिम्मत रखनी होगी तभी इस लोकतंत्र में युवाओं की सार्थकता है।

अवन सोनकर
छात्राध्यापक प्रथम सेमेस्टर

खूबसूरत जीवन

बात उन दिनों की है, जब मैं जवाहर नवोदय विद्यालय, कुशीनगर की प्रवेश परीक्षा (जो कि एक केन्द्र संचालित सरकारी आवासीय विद्यालय है) उत्तीर्ण करके 6वीं कक्षा में वर्ष 2009 के जुलाई महीने में प्रवेश हुआ। मैं मेरे पापा और मेरे पूरे परिवार सहित गांव के सभी लोग अत्यंत प्रसन्न थे। क्योंकि जवाहर नवोदय विद्यालय भारत का एक प्रतिष्ठित आवासीय विद्यालय होता है एवं उसमें नामांकन उन्हीं बच्चों का होता है जो एक कठिन प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करते है। इसलिए मेरे पूरे परिवार के साथ ही मेरे पूरे गांव को मेरी प्रतिभा एवं जीवन में कुछ श्रेष्ठ करने का विश्वास जग गया था। मैं हॉस्टल में आ गया।

छठवीं से दसवीं तक की पढ़ाई (वर्ष 2009-2014) तक विद्यालय के हॉस्टल में रहते हुए मैंने बहुत ही अच्छे एवं सतत् तरीके से की एवं इस दौरान मेरे अंक भी अच्छे आये थे। दसवीं कक्षा तक हमारे कक्षा के कुल विद्यार्थीयों की संख्या 80 थी एवं 11वीं कक्षा में सिर्फ एक स्ट्रीम सांइस की वजह से (जिसकी सीटें 40 ही थी) 80 बच्चों में से 40 बच्चों को ही अपने विद्यालय में रखना था शेष बचे बच्चों को दूसरे नवोदय विद्यालय में स्थानांतरित करना था। 10वीं कक्षा में पाये गये विज्ञान एवं गणित विषयों के अंको के आधार पर लिस्ट में ऊपर से 40 बच्चों को रखकर शेष 40 बच्चों (जिनके अंक 10वीं कक्षा के गणित एवं विज्ञान विषय)में कम थे। दूसरे जिलों के नवोदय विद्यालय में स्थानान्तरित कर दिया गया। उनमें से एक मैं भी था। क्योंकि मेरे भी गणित विषय में कम अंक थे।

इस स्थानान्तरण से मैं अत्यधिक हीन भावना का शिकार हो गया एवं मैं उदास और दुःखी हो गया। मेरा स्थानान्तरण जवाहर नवोदय विद्यालय, फैजाबाद में हुआ। नवोदय विद्यालय, फैजाबाद के हॉस्टल में रहने के दौरान मुझको यह अहसास हुआ कि नवोदय विद्यालय, फैजाबाद की परिस्थितियाँ एवं माहौल कुशीनगर के नवोदय विद्यालय से भिन्न है। वहाँ का हॉस्टल मुझे अच्छा नहीं लगता था। एक तो मेरे अन्दर बैठी हीनभावना, मेरा अकेलापन एवं मेरा नवोदय विद्यालय, फैजाबाद की परिस्थितियों के साथ सामंजस्य न बिठा पाना, मुझको तनाव एवं भयावह 'मानसिक अवसाद' का शिकार बना दिया। मैं अत्यधिक तनाव, अकेलापन, एवं अवसादग्रसित महसूस करने लगा था, नवोदय विद्यालय, फैजाबाद में स्थानान्तरित होकर।

समय धीरे-धीरे बीत रहा था एवं अवसाद की समस्या बढ़ती जा रही थी। फलस्वरूप मैं इससे पूरी तरह टूट गया और अपनी जिन्दगी को समाप्त करने की ठान ली। मैंने आत्महत्या का मन बना लिया। एक दिन फाँसी लगाने के लिए विद्यालय के हॉस्टल में रस्सी का इंतजाम करने लगा। रात को मेस से खाना खाकर आने के पश्चात मैंने यह सारा प्लान किया था। तब तक पता नहीं मुझको क्या हो गया कि मैंने बातों ही बातों में एक बच्चे से रस्सी के इंतजाम वाली बात दी और लड़के को मुझ पर संदेह हो गया। उस लड़के ने तुरन्त उसी रात हमारे हॉस्टल के सदनाध्यक्ष महोदय (इकोनॉमिक्स सर) को बता दिया। सदनाध्यक्ष महोदय उसी रात को तुरन्त हॉस्टल में आये एवं अचंभित एवं भौचक्का चेहरे एवं हाव-भाव से मेरे पास मेरे कमरे में आये। वह एकदम अचंभित एवं आश्चर्यचकित थे मेरी आत्महत्या वाली बात जानकर एवं इस प्रकार मुझसे अकेले में ले जाकर इस समस्या का कारण पूछा.....? पहले तो मैंने कुछ भी बताने से इंकार कर दिया क्योंकि मैं डर एवं संकोच कर रहा था। लेकिन जब उन्होंने पूरी तरह से सहानभूति प्रकट की व मेरे मनोविज्ञान को समझते हुए मुझको अपने वश में ले लिया। तब मैंने उन पर विश्वास कर धीरे-धीरे अपनी सारी समस्या उनसे बता दी। मैंने उनको अपनी हीनभावना, तबादले का असर, परिस्थितियाँ के साथ सामंजस्य न बिठा पाने तथा अकेले पन से उपजे तनाव एवं भयानक अवसाद के बारे में बताया।

उन्होंने (सर ने) हमारी सारी समस्याओं को ध्यान से सुना, पहचान एवं उसका यथासंभव निराकरण भी किया। उन्होंने मुझको नयी परिस्थितियों से तालमेल बिठाने, बच्चों के साथ घुलने-मिलने, प्रसन्न रहने, खुशी से पढ़ाई करने, बींती हुई बातों को भूल जाने सहित, पढ़ाई, जीवन की खूबसूरती एवं जिन्दगी की विषम परिस्थितियों का सामना करने सहित अन्य ढेरों बातें बताई

एवं मुझे सही रास्ता दिखाया।उनकी बातें मुझको प्रभावित कर गयी। मैंने उस दिन से आत्महत्या का विचार त्याग दिया तथा आगे ऐसा कदम न उठाने के बारे में सोचा।

आगे मैंने जिन्दगी को जीने का संकल्प लेते हुए कक्षा 12वीं एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अच्छे अंको से स्नातक उत्तीर्ण करते हुए आज मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित संघटक प्रशिक्षण महाविद्यालय 'के.पी. ट्रेनिंग कालेज' का बी.एड. प्रथम सेमेस्टर का छात्र हूँ। यदि उस दिन मैंनें अपनी जिन्दगी की लौ बुझा ली होती तो मेरे पास वर्तमान का यह खूबसूरत जीवन नहीं होता। आगे मैं बी.एड.करके एक अच्छा अध्यापक बनकर अपने छात्रों को समाज का एक उत्कृष्ट व श्रेष्ठ नागरिक बनाना चाहता हूँ।

मैं अपनी कहानी के माध्यम से अपने महाविद्यालय के सभी भाई-बहनों से यह कहना चाहता हूँ कि जीवन खूबसूरत है एरां कीमती है। जीवन में विषम परिस्थितियाँ या असफलताएं चाहे कितनी भी क्यों न आ जाय हमें उससे लड़ना चाहिए एवं धैर्य रखना चाहिए क्योंकि कठिनाईयाँ मौसमी होती है वे आती है एवं चली जाती है लेकिन हमारा जीवन बहुत कीमती है...एक बार यह चला गया तो लौटकर नहीं आयेगा.....

रत्नेश कुमार यादव
छात्राध्यापक प्रथम सेमेस्टर

हँसना जरूरी है.....

1. पोलियो ड्राप पिलाने वाले जब आये..... सोनू (अपनी पत्नी से)-बंदूक और कारतूस कहाँ हैं? पोलियो ड्राप पिलाने वाले भागे। सोनू ने पीछे से आवाज दिया-रूको....रूको....भाई से हमारे बच्चों के नाम हैं।

2. राजू की पत्नी राजू से - आज आप! मैकडोनॉल चलिए
   राजू (पत्नी से) - स्पेलिंग बताओ तो चलेंगे।
   पत्नी - अच्छा फिर KFC चलें।
   राजू - KFC का फुलफार्म बताओं तो चलेंगे।
   पत्नी - रहने दो, ऐसा है ठेले पर से छोले-भटूरे ला दो बस।

3. राजू - क्या कर रहे हो?
   सोनू - मूँगफली खा रहा हूँ।
   राजू - वाह! अकेले-अकेले
   सोनू - अब 10 रुपये की मूँगफली से भण्डारा करूँ क्या.....?

सपनों में रख आस्था

सपनों में रख आस्था, कर्म तू किए जा,
त्याग से ना डर आलस परित्याग किए जा।

गलती कर ना घबरा,
गिरकर फिर हो जा खड़ा।
समस्याओं को रास्तों से निकाल दें,
चट्टान भी हो तो ठोकर से उछाल दे।

रख हिम्मत तूफानों से टकराने की
जरूरत नहीं है किसी मुसीबत से घबराने की
जो पाना है बस उसकी एक पागल की तरह चाहत कर
करता रह कर्म मगर साथ में ईश्वर को भी याद कर।

फिर देख किस्मत क्या-क्या रंग दिखलाएगी,
तुझको तेरी मंजिल मिल जायेगी
मंजिल मिल जायेगी।

शुभ्रांशी
छात्राध्यापिका प्रथम सेमेस्टर

''कलयुग की पक्षी''

(एक बालिका जो आजादी में आजाद नहीं)

''मैं जीना चाहती हूँ।''
इस खुले आसमान में अपनी बाँहे फैलाएं
महसूस करना चाहती हूँ आजादी को
इन उमड़ते काले बादलों में चिड़िया के समान
चहचहाना चाहती हूँ, उन डालियों पर
इन बारिश की हल्की बूँदों में
इस अशांत मन को शांत करना चाहती हूँ
तेज बनकर चमकना चाहती हूँ
मैं कलरव कर.....अपनी उड़ान भरना चाहती हूँ
मैं कलयुग की पक्षी.....जीना चाहती हूँ

मन्तशा अली
छात्राध्यापिका प्रथम सेमेस्टर

ज़िन्दगी-ए-सफर

उदयांचल से जीवन मेरा, जब बढ़ा तिमिर की ओर।
आशा, स्वप्न, उमंग खो गए, ताकता मैं शून्य की ओर।
उल्का-सा लौ जलता कभी, निराशा की आँधी से बुझ जाता वह भी।
अनचाहा सन्नाटा था पसरा, भला था शाहद वही दुनियादारी का शोर।
सांत्वना भी नागिन-सी डसने वाली सी लगती थी।
माँ-बाबू जी के चेहरे पर भय पसरी सी लगती थी।
डॉ0 के नाम से ही जो मैं सहम सा जाता था।
अस्पताल तक ही दुनिया मेरी अब सीमित सी लगती थी।
ईश्वर से शिकायत कभी, शिकायत कभी स्वयं से भी थी।
स्वास्थ्य को जो न दिया महत्व कभी, कसक यह रह-रह कर उठती थी।
इस बाजार समान दुनिया में जहाँ पैसा बढ़-बढ़ कर बोलता है।
वह खाद्य पदार्थों में भी तो मिलावट का जहर घोलता है।
अस्पताल में अकेला था कहाँ, वहाँ भी काफिला था साथ मेरे।
कैंसर के इलाज में अपने, बस अपने ही थे साथ मेरे।
दर्द से कराहा जब-जब, सांसो ने आकर हौले से कहा
भूल जायेगा तू सब तकलीफ एक दिन जो रहूँगी मैं साथ तेरे
शारीरिक पीड़ा भी सच, जिन्दगी से कितनी छोटी होती है।
साँसो को कायम रखने हेतु कितने कष्ट धोती है।
परन्तु इस पीड़ा पर, एक दिन फतह मैं पा गया।
सांसे! कीमत पहचान गया मैं तेरी, अब बेहतर जिन्दगी मैं बनाऊँगा।

सोनू शर्मा
छात्राध्यापक तृतीय सेमेस्टर

चलो एक फूल लगाया जाए

चलो एक फूल लगाया जाए
नूतन चमन बनाया जाए

मंद पवन की पुरवाई हो
नन्हीं कलियों की अंगड़ाई हो
भवरों की गुंजन सुनकर,
तितलियों का पीछा कर
खुद को बच्चा बनाया जाए

चलो एक फूल लगाया जाए
नूतन चमन बनाया जाए

मद्धम-मद्धम, हौले-हौले
दबे पांव बिना कुछ बोले
तितलियों को हाथों पर बिठाया जाए

चलो एक फूल लगाया जाए
नूतन चमन बनाया जाए

पुरवाई और पछुवाई लड़ने को मजबूर हुए
फूलों की चुंबन की खातिर, प्रतिस्पर्धा भरपूर किए
किसमें कितनी क्षमता है, फूलों को बताया जाए

चलो एक फूल लगाया जाए
नूतन चमन बनाया जाए

उमाशंकर
छात्राध्यापक प्रथम सेमेस्टर

''पतन के नये कीर्तिमान छूती पत्रकारिता''

हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार डॉ० बरसाने चतुर्वेदी ने लिखा है कि ''चमचागिरी जानते हैं तो अपना काम जानने की जरूरत नहीं है।'' यद्यपि यह कथन सार्वजनिक है तथापि पत्रकारिता क्षेत्र में उसकी प्रासंगिकता और भी व्यापक है। यहीं से प्रेरणा लेते हुए भारत की मुख्य धारा मीडिया विशेषकर टी०वी० पत्रकारिता ने अपनी नयी मर्यादाए और मानदण्डों की खोज की है और इन मर्यादाओं में सभी प्रकार की अमर्यादा, अनैतिकता का पूर्ण समावेश है। कभी खबरों को पढ़ने से लेकर आज खबरें बनाने तक प्रगति कर चुकी टी.वी. पत्रकारिता का राजनीति से सदैव ही परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सेवक-स्वामी का सीमित सम्बन्ध रहा है। आज इस सेवक ने स्वयं को स्वामी में पूर्णतः विलय कर किंतु पतन के एक नये गद्वर को साक्षात्कार किया है और सिद्ध किया कि मर्यादा एक ढ़ोंग है चारित्रिक दोहरापन है और अमर्यादा की शाश्वत और सात्विक है।

कभी टी.वी. मीडिया सत्ता के झूठे प्रचारों और दावों की पोल खोल जनता को जागरूक करता था किंतु आज मीडिया जनता में झूठ फैला रही और जनता उनका पर्दाफाश करती है। खबरों का विश्लेषण केवल अभद्र बहसों तक सीमित हो गया है जहाँ बहस सूचनाओं पर न होकर धारणाओं का परिणाम यह है कि चैनलों को पत्रकारिता मानने वाली जनता आज भी झूठ को स्वीकार करने लायक बन चुकी है।

हाल की एक घटना की बात करे तो प्रख्यात साहित्यकार विभूति नारायण राय जी को एक सम्मान प्राप्त हुआ और एक बड़े चैनल ने इस खबर के साथ टी०वी० पर ''विभूति नारायण'' नाम से प्रसिद्ध एक धारावाहिक के पात्र की तस्वीर लगा दी। मतलब की ब्रेकिंग न्यूज की भूख इस तरह से हावी है कि खबरों की पड़ताल करने का समय नहीं है और इसका परिणाम यह है कि एक सामान्य आदमी अगर इन चैनेलों को न देखे तो उसके पास जानकारी नहीं है और देखे तो गलत जानकारी है।

आज ये बातें भले ही छोटी लगें किंतु इनका कितना दुष्प्रभाव हमारे समाज और सामाजिक संरचना पर पड़ रहा है। इसकी कल्पना आज हम नहीं कर सकते। इतिहास बवाह है कि सत्ताओं ने अपनी कमियों के आवरण हेतु मीडिया को एक लोकप्रिय हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है, किंतु सत्ता के मीडिया पर इस नियंत्रण का अर्थ हमारी नागरिकता के दायरे का संकलन है क्योंकि मीडिया अपने प्रभाव से हमारे नागरिक बोध को इस प्रकार खत्म करता है कि हमें इसकी भनक भी नहीं लगती, एक वरिष्ठ पत्रकार के शब्दों में-

''न्यूज चैनलों और मदारी के खेल में अंतर होता है, आप जानते है कि मदारी खेल दिखा रहा और मदारी का खेल खत्म हो जाता है।''

किन्तु पत्रकारिता के इस पतन का कारण केवल पत्रकार या सत्ता नहीं, हम स्वयं भी इसके काफी जिम्मेदार है क्योंकि हम कभी भी खराब पत्रकारिता की आलोचना नहीं करते और इसका परिणाम यह है कि आज हमारे पास न पत्रकार है, न पत्रकारिता और है तो विभिन्न राजनीतिक दल के प्रवक्ता जो एंकर का वेश धारण किये हैं और कभी लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में माने-जाने वाली पत्रकारिता आज केवल सत्ता के राजसिंहासन का चौथा पाया बन कर रह गयी है।

चन्दन त्रिपाठी
छात्राध्यापक, द्वितीय सेमेस्टर

करै के अहै चूल्हा चौका

(संस्मरण)

शहर से तीन साल बाद अपने गांव सामंतपुर लौटी, गांव का रंग ढ़ंग काफी बदल गया। सड़के चौड़ीकरण योजना से प्रभावित शेषनाग की तरह फन फैलाती जा रही है। इंगलिश मीडियम स्कूल तो कुकुरमुत्ते की तरह उग आए हैं, शहर की सुविधाएं तो सभी आ गयी है हलांकि सस्ती चीजों की गुणवत्ता की गारंटी नहीं होती सो यहां भी यही हाल है। गांव में मेरा मोहल्ला सबसे बड़ा है और उसके हर सिरे पर एक मंदिर मोहल्ले की रक्षा करते हुए अपना पताका फहरा रहा है।मंदिरों में भी निवेश बढ़ा है इन दिनों साउण्ड लगाकर रोज कहीं न कहीं भजन कीर्तन करना तो लाजमी है कभी बंद भी रहा साउंड तो मुस्लिमों के मुहल्ले वाले उसकी कमी पूरा कर देते हैं।

इस मोहल्ले का एक संयुक्त परिवार मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित करता है, मेरी मित्र नम्रता का परिवार जो कि बहुत निराला है। नम्रता के दादा जी गाँव के सबसे प्रतिष्ठित पंडित और प्रइमरी के रिटायर्ड अध्यापक हैं उनका सारा समय पूजा अर्चना करने तथा घर की महिलाओं पर नज़र रखने में जाता है, बड़े पापा गेस्ट हाउस के मालिक हैं, चाचा भी पंडित है चूंकि वो तीन लड़कों के बाप हैं तो गर्व से उनका सीना छप्पन इंच का रहता है और पिता जी प्राइवेट टीचर और दो बड़ी बेटियों के पिता हैं सबसे कम आमदनी उसके पिता जी की है। घर के मुखिया तो दादा जी हैं लेकिन उनका शासन केवल नम्रता के पिता जी पर ही चलता है अन्य दो बेटों पर नहीं।

मलकिया मेरे गांव के बगल एक पुरवा है, आज वहाँ मेला है, पूरे गांव में चहल-पहल है। बच्चों का उत्साह देखते बनता है। नम्रता, मेरी पड़ोसी दोस्त के घर के भी सभी लड़के दंगल देखने जाने की तैयारी में हैं। लेकिन उसका इनसब चीजों से कोई इत्तेफाक नहीं। वह तो यही कहती है कि उसका इन सब में दिलचस्पी नहीं लेकिन भाईयों के दंगल देखकर लौटने के बाद बहाने से उनसे वहाँ की एक-एक घटना को बाल से खाल निकालते हुए जान लेती है।

घर की चहल-पहल खत्म होते ही सूखे कपड़े हटाने छत पर पहुँचती है। मन में न जा पाने की निराशा लिए हुए उसे अचानक खिलखिलाते बच्चों की आवाज सुनाई देती है, शायद वे मेला जाने वाले ही हैं, दौड़कर घर के मुख्य द्वार की तरफ वाली बालकनी से सड़क की ओर झांकना चाहती है कि अचानक उसके कदम ठिठक गए। घर के बाहर बैठ बाबू जी, बड़े पापा, चाचा का ख्याल आते ही निराश होकर लौट आती है। थोड़ी देर बाद घर के पिछले हिस्से की तरफ वाली बालकनी की ओर झांकती हुर्द बच्चों के काफिलें का वहाँ तक पहुंचने का इंतजार करती है। थोड़ी देर बाद काफिला दिखाई देता है जिसमें कुछ छोटे बच्चे रंग बिरंगे कपड़े पहने खुशी से अपने अभिभावक की उंगली पकड़े हुए उन्हें लगभग घसीटे हुए तेजी-तेजी चल रहे हैं, कुछ किशोर लड़के अपने हम उम्र बच्चों के साथ अपने कारनामों के किस्से सुनाते हुए सेखी बघार रहे हैं और काफिलों के पास पहुँचकर हॉर्न बजा-बजा कर सड़क अपने लिए खाली होता देख शहंशाह की तरह गर्व अनुभव कर रहे हैं। ये सब दृश्य देखकर उसके बड़ी-बड़ी काली आंखों में जैसे चमक सी उत्पन्न हो जाती है। इसी दौरान उसे एक साइकिल जाती हुई दिखी जो कि अपनी क्षमता से ज्यादा भार लिए हुए थी, उसने उसे आकर्षित कर लिया। साइकिल पर हमारे गांव का मंगरू था जो कि दलित है, अपने साइकिल की डंडी में अपनी छोटी लड़की और पीछे स्टैण्ड पर बड़ी लड़की को बिठाए उनके तमाम सवालों के जवाब देता हुआ उन्हें मलकिया का दंगल दिखाने ले जा रहा था। उन बच्चियों के चेहरे में से उनके दांत ही दूर तक चमकते दिख रहे थे। जिससे उनकी खुशी का अंदाजा लगाया जा सकता था। उनको देखकर उसका मन उल्लास से भर गया लेकिन अचानक मंगरू को देखकर उसका मन व्यथित हो गया। वह सोचने लगी समाज में सबसे ज्यादा शोषित इस पिता से भी उसके पिता की स्थिति बदत्तर क्यों है? क्यों वो इतनी आजादी से उसकी खुशियों के लिए फैसले नहीं ले सकते?

नम्रता अपनी उम्र से तीन चार वर्ष बड़ी ही दिखती है, उसकी उम्र के अन्य बच्चों की तरह न तो उसकी गतिविधियां है न ही उसका

रहन-सहन। उसके बाल उसकी लम्बाई के आधे से अधिक, घुटनों को ढ़के रखने वाली कुर्तियाँ भी उसकी उम्र और बढ़ा देती है, हलांकि उसकी बड़ी-बड़ी काली आंखों में इतनी सारी जिज्ञासाएं भरी होती है कि अगर उन्हें पढ़ जाय तो वे अपने उम्र से छोटी ही नजर आएंगी। मैं कहीं घूम कर आऊँ और उसे बताए बिना और अपनी सेखी बघारे बिना मुझसे रहा नहीं जाता है, मानों मेरी आंखों से वो पूरा दृश्य देख लेना चाहती हो। कभी-कभी तो मुझे बहुत गुस्सा आता है लेकिन जब मैं उस नम्रता के बारे में सोचती हूँ जिसे मैं बचपन से जानती हूँ तो मुझे उस पर प्यार और तरस आता है। मैं तो शहर में पढ़ने लगी लेकिन नम्रता यहीं गांव में ही रह गयी।

खेलने में नम्रता मुझसे भी तेज थी इसलिए मैं तो उससे जलती थी और चाहती थी कि वो खेलने न आने पाए तो अच्छा है। एक बार तो हम दो तीन लड़कियां खेल रही थी तभी उसके बड़े पापा प्रचण्ड रूप धारण किए हमारी तरफ चले आ रहे थे उनकी आंखे गुस्से से लाल थी, नम्रता इन सबसे बेखबर खेलने में मशगूल थी। उन्हे देखते ही हम सब रुक गए। वो नम्रता की तरफ बढ़े चले जा रहे थे और जोर से दहाड़ते हुए डाँटने लगे। उनकी आवाज सुनते ही नम्रता ठिठक गयी उसके कान लाल हो गये उसकी आंखों में भय ही भय था। थोड़ी देर बुत बने रहने के बाद पता नहीं कहाँ से उसके अन्दर इतनी स्फूर्ति आयी कि वो इतनी तेजी से भागी कि घर के अंदर जाकर ओझल हो गयी। उसके अंदर जाने के बाद वो खुद रोज की तरह घर के बाहर कुर्सी लगाकर जंगल के राजा की तरह बैठ गए। आज भी मुझे याद है उसके बड़े पापा डांटते हुए कह रहे थे ''चल घर के अंदर, नाक कटावत अहै हमार, आज के बाद कभी इधर उछलत देखे तो हमसे बुरा कौनो न होई।''

उस दिन के बाद से वो कभी खेलने नहीं आयी अब तो मैं खुद ही चाहती थी कि वो खेलने आए। अब हमारे पास खेलने के लिए केवल एक ही दोस्त बची थी क्योंकि हमारी उम्र की कोई लड़की नहीं थी पंड़ितो के मुहल्ले में। मैं उससे अब उसके घर ही मिलने जाने लगी, बीस लोगों के संयुक्त परिवार में दस साल की नम्रता कभी मुझे लहसुन छीलते मिलती तो कभी अपने दादा, चाचा आदि की आज्ञा का पालन करते हुए उन्हें जरूरत का सामान पहुँचाने का काम करती हुई। घर के लढ़के तो खेलते ही रहते यहाँ तक कि उसके बढ़े पापा की लड़कियाँ उससे उम्र में आठ-दस साल बड़ी हैं वो भी कोई काम नहीं करती थी, आखिर उनके पापा एक गेस्ट हाउस के मालिक जो थे।

मेरे शहर जाने की बारी आई तो उसके पिता भी उसे भेजना चाह रहे थे। हालांकि उनकी आमदनी बहुत कम है फिर भी उन्होंने निश्चय कर लिया था। नम्रता के दादा पंडित बिन्देश्वरी प्रसाद अपने सिद्धांत के पक्के है कि लड़की को घर के बाहर नहीं कदम रखनाहै, हालांकि वो दुर्गा, काली, राधा आदि के सबसे बड़े पुजारी हैं। पारिवारिक असहमति के बाद तो उन्हें बाहर के लोग भी ताने और नसीहतें देने लगे।

हमारे गांव की विमला चाची को हमारे गांव की प्रसारण मंत्री कहा जाय तो गलत नहीं होगा, गांव की औरतों के साथ उनके संवाद को मैंनें सुना-''बिटिया चाहे जेतना पढ़ ल्या करैं के उहै चूल्है चउका'' इनसे भी अधिक प्रगतिशील महिला रंजना चाची जिन्होंने अपनी लड़की की शादी इंटर के बाद ही कर दी, उनका तो हमेशा ही नम्रता की मम्मी को सलाह देते हुए मैं सुनती थी, ''बिटियन से रोटी बनवाया करा, नहीं फिर इही तरह के बिटियन ससुरे में नहीं खटातिन, वह मिसराइन के बिटिया का देखा न भाग तौ आइस ससुरे से।''

अन्ततः नम्रता शहर पढ़ने के लिए नहीं जा सकी, उसकी सारी ख्वाहिशें धरी की धरी रह गयी। अपने साधनों का पिटारा जो पहले वो मेरे सामने ही खोला करती थी अब उसे हमेशा के लिए बंद करके रख लिया है। शायद उसने भी अपने नियति को स्वीकार कर लिया है।

कु० कीर्ति
छात्राध्यापिका, द्वितीय सेमेस्टर

समाचार पत्रों की नज़र से

केपी ट्रेनिंग कालेज में ईडब्ल्यूएस का प्रवेश 26 एवं 29 को केपी ट्रेनिंग कालेज की प्रिंसिपल डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि आर्थिक आधार पर कमजोर वर्ग के अभ्यर्थियों की 22 को हुई काउंसलिंग के आधार पर प्रवेश पहुंचे चयनित अभ्यर्थियों की सूची जारी कर दी गई है. प्रवेश हेतु अभ्यर्थी 26 व 29 को फार्मालय में सभी अभिलेखों के साथ उपस्थित हो.

बीएड अभ्यर्थियों का ओरिएंटेशन एक को

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड के नवप्रवेशियों का ओरिएंटेशन कार्यक्रम एक अगस्त को होगा। प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि दिव्यांग कोटे के वह अभ्यर्थी जो इविवि के मेडिकल बोर्ड में उपस्थित हुए हैं। उनकी काउंसिलिंग 30 जुलाई को होगी।

prayagraj@inext.co.in

PRAYAGRAJ (25 Sept): जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज पीजी में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है. इस मौके पर बुधवार को विभिन्न गर्ल्स डिग्री कॉलेज की ओर से हिंदी नाटक का मंचन हुआ. जिसमें एसएस खन्ना डिग्री कॉलेज की ओर से बूढ़ी काकी, जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज की ओर से सद्गति और आर्य कन्या डिग्री कालेज ओर से तौलिया नाटक प्ले किया गया. नाटक प्रतियोगिता में बूढ़ी काकी को प्रथम, सद्गति को द्वितीय और तौलिया को तीसरा स्थान मिला. हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस अवसर पर पारुल मिश्रा को प्रथम, अस्फा महमूद को द्वितीय और साक्षी विश्वकर्मा व ज्योति केसरवानी को संयुक्त रूप से तीसरा स्थान मिला. वहीं निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान केपी ट्रेनिंग कॉलेज की अमरनाथ मिश्र, जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज के प्रगति यादव और केपी ट्रेनिंग कालेज की शिवानी मिश्रा को तीसरा स्थान मिला. चीफ गेस्ट प्रोफेसर अनीता गोपेश ने छात्राओं को रंग संस्था में कार्य करने के लिए प्रेरित किया. कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. चंदा देवी ने की.

केपी ट्रेनिंग: बीएड में प्रवेश को नया कटऑफ जारी

प्रयागराज। केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड की रिक्त सीटों पर प्रवेश के लिए गुरुवार को नया कटऑफ जारी दिया गया है। प्राचार्य डॉ. अंजना श्रीवास्तव के अनुसार दिव्यांग वर्ग की दूसरी, विज्ञान में सभी वर्ग के तीसरी और ओबीसी वर्ग की चौथी मेरिट सूची जारी की गई है।

दिव्यांग वर्ग के अभ्यर्थियों को शुक्रवार और मेरिट सूची में चयनित अन्य वर्ग के अभ्यर्थियों को 13 अगस्त को बुलाया गया है। वहीं, एडीसी में बीएससी की बची सीटों के लिए नया कटऑफ जारी कर किया गया है। प्राचार्य डॉ. अतुल कुमार सिंह के अनुसार शुक्रवार को सभी वर्ग के 125 या अधिक अंक, ओबीसी के 115 या अधिक, एससी के 80 या अधिक, ईडब्ल्यूएस के 110 या इससे अधिक अंक पाने वाले अभ्यर्थियों को प्रवेश के लिए बुलाया गया है। इसी प्रकार जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज की प्राचार्या डॉ. कमला दुबे के अनुसार 9 अगस्त को सभी वर्ग के 75 या अधिक अंक पाने वाली छात्राओं का प्रवेश होगा।

जल संचयन व संरक्षण की दी जानकारी

प्रयागराज। केपी ट्रेनिंग कॉलेज में सोमवार को जल शक्ति अभियान के तहत संभाषण एवं संगोष्ठी हुई। प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने वर्षा जल संचयन एवं भूजल संरक्षण पर विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. शरद श्रीवास्तव, डॉ. प्रियंका सिंह, अतुल, डॉ. राजेश कुमार पांडेय, डॉ. नमिता साहू, डॉ. शक्ति शर्मा आदि मौजूद रहे।

केपी ट्रेनिंग : प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि बीएड में प्रवेश के लिए कला एवं विज्ञान वर्ग के अभ्यर्थियों की दूसरी सूची महाविद्यालय के सूचनापट और वेबसाइट पर जारी कर दी गई है। अभ्यर्थी पांच व छह अगस्त को प्रवेश के लिए पहुंचे।

केपी ट्रेनिंग कॉलेज : महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि बीएड प्रवेश परीक्षा की काउंसिलिंग में प्रवेश के लिए चयनित अभ्यर्थियों की सूची महाविद्यालय के सूचना पटल व वेबसाइट पर उपलब्ध है। चयनित अभ्यर्थी प्रवेश के लिए महाविद्यालय में 24 से 26 जुलाई के

केपी बीएड ट्रेनिंग कॉलेज में आयोजित फ्रेशर्स फंक्शन में नृत्य करतीं छात्राएं। • हिन्दुस्तान

बीएड में प्रवेश के लिए काउंसिलिंग 15 से

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड के लिए काउंसिलिंग 15 जुलाई से शुरू होगा। प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि कला वर्ग में सभी वर्ग के 146 या अधिक, एससी वर्ग के 122 या अधिक, एसटी वर्ग के सभी तथा कर्मचारी कोटे के 92 या अधिक अंक पाने वालों को बुलाया गया है। वहीं विज्ञान वर्ग में सभी वर्ग के 146 या अधिक, एससी वर्ग के 126 या अधिक, एसटी वर्ग के सभी को काउंसिलिंग के लिए बुलाया गया है।

हिन्दुस्तान 06
प्रयागराज • गुरुवार • 26 सितंबर 2019

प्रधानाचार्यों की नियुक्ति में आरक्षण लागू करें

प्रयागराज। अनुसूचित जाति/जनजाति, पिछड़ा एवं अल्पसंख्यक शिक्षक महासभा की ओर से 20 सूत्रीय मांगों के समर्थन में बुधवार को जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय पर धरना दिया गया। जिला महामंत्री प्रेम सागर ने प्रधानाचार्यों की नियुक्ति में आरक्षण लागू करने और सरकारी स्कूलों को पीपीपी मॉडल से चलाने का विरोध किया।

केपी ट्रेनिंग के छात्रों का शिक्षक पद पर चयन

प्रयागराज। केपी ट्रेनिंग कॉलेज की प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि उनके यहां के विद्यार्थियों का चयन शिक्षक पद पर हुआ है। 13 मेधावियों उपेन्द्र यादव, सारिका मौर्या, अजय यादव, सृष्टि श्रीवास्तव, सुप्रिया तिवारी, चंदन गुप्ता, नीरज, शैलेन्द्र, अभिषेक श्रीवास्तव, सारिका, सत्येंद्र, संत लाल, शिव साहब का केंद्रीय विद्यालय में शिक्षक पद पर हुआ है।

• ईश्वर शरण : पीजी का कटऑफ

प्राचार्य डॉ. आनंद शंकर सिंह ने बताया कि 23 दिसंबर को अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, प्राचीन इतिहास, वाणिज्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन, राजनीति विज्ञान, संस्कृत, मनोविज्ञान, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, अंग्रेजी, हिंदी में परास्नातक में प्रवेश के कटऑफ जारी किए हैं।

• सीएमपी : पीजी का कटऑफ

प्राचार्य डॉ. बृजेश श्रीवास्तव ने बताया कि रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, जंतु विज्ञान, दर्शनशास्त्र, एमकॉम, एलएलएम, भौतिक शास्त्र, गणित, अंग्रेजी, शिक्षाशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीति शास्त्र, संस्कृत, भूगोल, मध्यकालीन इतिहास, समाजशास्त्र, प्राचीन इतिहास, उर्दू, हिंदी और अर्थशास्त्र का कटऑफ जारी किया है।

• केपी ट्रेनिंग में ओरियंटेशन पांच को

केपी ट्रेनिंग कॉलेज की प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि बीएड के नव प्रवेशियों के लिए ओरियंटेशन प्रोग्राम पांच जनवरी को होगा।

नामांकन की अंतिम तिथि बढ़ाकर 31 दिसम्बर कर दी है। अध्ययन केन्द्र में एमए, बीए, बीकॉम, आदि में ऑनलाइन प्रवेश हो रहा है।

बीएड प्रवेश में प्रवेश 21 को

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड में शुक्रवार को तृतीय चरण एवं दिव्यांग की काउंसिलिंग शुक्रवार को हुई। प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि कटऑफ में शामिल होने वाले छात्रों का प्रवेश 21 दिसंबर को होगा।

केपी में फ्रेशर फंक्शन

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में सोमवार को उत्कर्ष के तहत पहले वर्ष सेमेस्टर के प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा फ्रेशर्स के लिए स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान गीत, संगीत व नृत्य की महफिल सजी। डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने सभी के उज्ज्वल भविष्य की ... और आशीर्वाद दिया। संचालन शिवानी ... ने किया। ... अंशिका, सुधांशु, श्वेता, अदिति, ज्ञान सिंह आदि मौजूद रहे।

को शनिवार और तीन को रविवार है।

सभी। एमकॉम प्रथम वर्ष में अनारक्षित वर्ग में 142 व एलएलएम में 164.90

...क्ता पद को आ...

जीव विज्ञान और गणित में ...

अम्बरीश, ... महिलाओं को दिए रहे। जासं, प्रयागराज

फ्रेशर्स फंक्शन में प्रशिक्षणार्थियों का किया गया स्वागत

प्रयागराज। केपी ट्रेनिंग कॉलेज में शुक्रवार को फ्रेशर्स फंक्शन हुआ। बीएड प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षणार्थियों का अभिनंदन किया गया। इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम और विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने सभी को सफल शिक्षक बनने की शुभकामनाएं दीं। शिवांगी श्रीवास्तव, निशा मिश्रा, डॉ. शरद श्रीवास्तव, डॉ. प्रियंका सिंह आदि उपस्थित रहीं।

बीएड की काउंसिलिंग 15 से

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड प्रवेश 2019 की काउंसिलिंग 15 से 18 जुलाई तक होगी। प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि कला वर्ग में 146 या उससे अधिक पाने वाले सभी वर्ग के अभ्यर्थी, एससी में 122 या अधिक अंक वाले, सभी एसटी व ... अधिक प्राप्त क... के अभ्यर्थी, वि... अधिक अंक प्रा... के अभ्यर्थी, 126 ... पाने वाले एससी ... अभ्यर्थी शामिल ...

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में 14, 15 को बीएड प्रवेश

प्रयागराज। केपी ट्रेनिंग कॉलेज बीएड काउंसिलिंग में चयनित अभ्यर्थियों का प्रवेश 14 एवं 15 दिसंबर को होगा। कॉलेज की प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव के अनुसार चयनित अभ्यर्थी तय तिथि पर 11 से दो बजे के मध्य कॉलेज में शैक्षिक प्रमाण पत्रों के साथ उपस्थित हों।

● कक्षाएं प्रारंभ : केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड प्रथम सेमेस्टर की कक्षाएं एक अगस्त से प्रारंभ हो गई हैं, सभी अभ्यर्थियों की कक्षाओं में उपस्थिति अनिवार्य है।

... के लिए विदाई समारोह आयोजित किया गया। छात्र ...

निबंध प्रतियोगिता में अरमरनाथ अव्वल

प्रयागराज। केपी ट्रेनिंग कॉलेज के अमरनाथ मिश्र ने जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज में हिंदी पखवारे के तहत 'स्वातंत्र्योत्तर भारत में बदलता हिंदी साहित्य एवं राजनीति परिदृश्य' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में पहला स्थान अर्जित किया। उन्हें 12 हजार रुपये एवं प्रमाणपत्र मिला। वहीं, तीसरे स्थान पर रहीं शिवानी मिश्रा को तीन हजार रुपये की धनराशि एवं प्रमाणपत्र दिया गया। कॉलेज के ही अनिल, संध्या गौड़, सोनू शर्मा एवं सुचिता यादव को एक-एक हजार रुपये का सांत्वना पुरस्कार मिला।

ऑलवेदर लाइट की रोशनी अधिक है. इस लाइट पर कोहरे का अधिक प्रभाव नहीं पड़ता है.

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में मनाई गई कुलभाष्कर जयंती

PRAYAGRAJ: केपी ट्रेनिंग कालेज में शुक्रवार ... कुलभाष्कर जयंती समारोह ... मनाया गया. चीफ गेस्ट डॉ ... महाविद्यालय इलाहाबाद यूनिवर्सिटी प्रो. पंकज कुमार रहे. कार्यक्रम की अध्यक्षता चौधरी राघवेन्द्र नाथ सिंह ने की. प्राचार्य डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने सभी गेस्ट्स ... किया. उन्होंने ... अनुकरणीय ... की चर्चा की. ... ने इस अवसर ... सांस्कृतिक कार्यक्रम ... स मौके पर बड़ी ... मौजूद रहे.

सहज मार्ग योग के बताए फायदे

प्रयागराज। केपी ट्रेनिंग कॉलेज में शुक्रवार को बलवंत सिंह एवं उनकी टीम के नेतृत्व में सहज मार्ग योग का आयोजन किया गया। इसमें प्रशिक्षणार्थियों समेत अन्य लोगों ने भी सैद्धांतिक ज्ञान के साथ कुंडलिनी जागरण के सोपान एवं दस्तक जीवन में लाभ के विषय में जानकारी प्राप्त की। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने अतिथियों का स्वागत किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शक्ति शर्मा ने किया।

स्काउटिंग गाइडिंग कार्यक्रम का समापन

जासं, प्रयागराज : केपी ट्रेनिंग कॉलेज में गुरुवार को स्काउटिंग गाइडिंग कार्यक्रम का समापन हुआ। मुख्य अतिथि सीएमपी पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. बृजेश कुमार रहे। इस दौरान उन्होंने कहा कि निःस्वार्थ कर्तव्य, संयम, अनुशासन और समर्पण ही प्रशिक्षण का उद्देश्य है। इस दौरान आरएन शुक्ला, डॉ. नसरीन रिजवी आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन श्वेता राय ने किया।

वाद-विवाद में खुशबू काव्य में देवेंद्र विजेता

प्रयागराज। केपी ट्रेनिंग कॉलेज में शुक्रवार को वाद-विवाद एवं काव्य पाठ प्रतियोगिता हुई। मुख्य अतिथि प्रो. ओपी श्रीवास्तव रहे। प्रतियोगिता में सात कॉलेजों के 26 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। 'शिक्षा नीति 2019 भारत के सामाजिक आर्थिक विकास में मील का पत्थर साबित होगी' विषय पर पक्ष से केपी ट्रेनिंग कॉलेज की खुशबू प्रथम, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय के तरुण द्वितीय रहे। वहीं, काव्य पाठ में ईसीसी के देवेंद्र कौर प्रथम, जगपत सिंह सिंगरौर पीजी कॉलेज के हेमंत यादव द्वितीय रहे। प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने अतिथियों का स्वागत किया। निर्णायक मंडल में डॉ. आभा सिंह, डॉ. अमिता पांडेय, डॉ. सुधा जायसवाल रहीं। संचालन डॉ. शक्ति शर्मा एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रियंका सिंह ने किया।

केपी ट्रेनिंग कालेज में मुंशी काली प्रसाद की जयंती पर ...

... केपी ट्रेनिंग कालेज में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें प्रशिक्षणार्थियों ने विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने मुंशी काली प्रसाद के व्यक्तित्व पर चर्चा की। उन्होंने प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद को भी याद किया। इस अवसर पर डॉ. शरद श्रीवास्तव, डॉ. प्रियंका सिंह, डॉ. नमिता साहू, डॉ. राजेश कुमार पांडेय, अतुल आदि मौजूद रहे। संचालन शक्ति शर्मा ने किया। इसी क्रम में कायस्थ पाठशाला के के प्रधान कार्यालय में अध्यक्ष पूर्व महापौर चौ. जितेंद्र नाथ सिंह ने मुंशी काली प्रसाद के चित्र पर माल्यार्पण ...

समन्वयक ... राष्ट्रीय से ... बढ़कर हो ... प्राचार्य ... कौमदी ... स्वागत कि... ने किया। ... शिवांगी दु... तिवारी तृ...

सांत्वना ... सिरोठि... निर्णाय... सेवा ... त्रिपाठी ने संचालन और डॉ. श... कुमारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। ... अवसर पर डॉ. चित्रा चौरसिया, सोनमती पटेल, डॉ. अनुपमा सिंह ...

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड प्रवेश

- आटर्स में एक दिसंबर को सभी वर्ग में 156 या अधिक अंक
- साइंस में पांच दो दिसंबर को सभी वर्ग में 152 या अधिक अंक
- आट्र्स में पांच दिसंबर को एससी वर्ग में 136 या अधिक अंक, ईडब्ल्यूएस श्रेणी में 158 या अधिक अंक, एसटी वर्ग में सभी
- साइंस में सात दिसबर को एससी वर्ग में 128 या अधिक अंक, इब्डल्यूएस श्रेणी में 147 या अधिक

वाद-विवाद में खुशबू, काव्य पाठ में देवेंद्र अव्वल

प्रयागराज। शहीद दिवस पर केपी ट्रेनिंग कॉलेज में वाद विवाद एवं काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वाद विवाद प्रतियोगिता में केपी ट्रेनिंग कॉलेज की खुशबू कुमारी ने पहला स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान पर नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय के तरुण कुमार रहे। जबकि केपी ट्रेनिंग कॉलेज की शिवांगी सुद को सांत्वना पुरस्कार मिला। काव्य पाठ में ईसीसी के देवेंद्र कौर ने पहला स्थान प्राप्त किया। जगत सिंह सिंगरौर पीजी कॉलेज के हेमंत यादव को दूसरा स्थान मिला जबकि केपी ट्रेनिंग कॉलेज के सत्य प्रकाश को सांत्वना पुरस्कार मिला। मुख्य अतिथि प्रो. ओपी श्रीवास्तव रहे। अध्यक्षता केपी ट्रस्ट के महामंत्री डॉ. एसडी कौटिल्य ने की। प्राचार्य डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन डॉ. शक्ति शर्मा व धन्यवाद डॉ. प्रियंका सिंह ने दिया।

नारायण ... प्रशासन का यह कदम आम लोगों के जीने के अधिकार के विरुद्ध है।

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में मनाई गई कुलभाष्कर जयंती

प्रयागराज। केपी ट्रेनिंग कॉलेज में शनिवार को कुलभाष्कर जयंती समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि डीन कॉलेज एंड डेवलपमेंट प्रो. पंकज कुमार ने मुंशी काली प्रसाद कुलभाष्कर के अनुकरणीय प्रेरक प्रसंगों की चर्चा की और उन्हें सभी के लिए ग्रहणीय बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता चौधरी राघवेंद्र नाथ सिंह ने की। प्राचार्य डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने अतिथियों का स्वागत, डॉ. शक्ति शर्मा ने संचालन और डॉ. प्रियंका सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड प्रवेश

- आटर्स में एक दिसंबर को सभी वर्ग में 156 या अधिक अंक
- साइंस में पांच दो दिसंबर को सभी वर्ग में 152 या अधिक अंक
- आट्र्स में पांच दिसंबर को एससी वर्ग में 136 या अधिक अंक, ईडब्ल्यूएस श्रेणी में 158 या अधिक अंक, एसटी वर्ग में सभी
- साइंस में सात दिसंबर को एससी वर्ग में 128 या अधिक अंक, इब्डल्यूएस श्रेणी में 147 या अधिक

डिवीजन में हरि... व एलेन रॉथ, ... भारती, अंशुल ...

बीएड प्रवेश के लिए नया

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड में काउंसिलिंग के लिए दूसरी कटऑफ जारी कर दी गई है। प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि कटऑफ मे शामिल होने वाले छात्र 18 दिसंबर को कॉलेज में जरूरी दस्तावेज के साथ उपस्थित हो। वहीं, दिव्यांग कोटे के अभ्यर्थियों को बीएड में काउंसिलिंग के लिए 17 दिसंबर को बुलाया गया है।

बीएड प्रवेश के लिए नया कटऑफ

● केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड में काउंसिलिंग के लिए दूसरी कटऑफ जारी कर दी गई है। कटऑफ में शामिल होने वाले अभ्यर्थी 18 दिसंबर को कॉलेज में जरूरी दस्तावेज के साथ उपस्थित हों। दिव्यांग कोटे के अभ्यर्थियों को बीएड में काउंसिलिंग के ...

समारोह में बीएड प्रशिक्षुओं ने मोहा मन

प्रयागराज। केपी ट्रेनिंग कॉलेज में शुक्रवार को कुलभाष्कर जयंती समारोह का आयोजन हुआ। बीएड प्रशिक्षुओं ने विविध प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी का मनमोह लिया। मुख्य अतिथि डीन सीडीसी प्रो. पंकज कुमार ने मुंशी काली प्रसाद के प्रेरक प्रसंगों की चर्चा की। अध्यक्षता कर रहे चौधरी राघवेंद्र नाथ सिंह मुंशी के जीवन पर प्रकाश डाला। प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन डॉ. शक्ति शर्मा और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रियंका सिंह ने किया। इस अवसर पर अरुणा अस्थाना, डॉ. शरद श्रीवास्तव, डॉ. नमिता साहू, अतुल, डॉ. राजेश कुमार पांडेय रहे।

बीएड प्रवेश में प्रवेश 21 को

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड में शुक्रवार को तृतीय चरण एवं दिव्यांगों की काउंसिलिंग शुक्रवार को हुई। प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि कटऑफ में शामिल होने वाले छात्रों का प्रवेश 21 दिसंबर को होगा।

● केपी ट्रेनिंग में ओरियंटेशन पांच को

केपी ट्रेनिंग कॉलेज की प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि बीएड के नव प्रवेशियों के लिए ओरिंयटेशन प्रोग्राम पांच जनवरी को होगा।

बीएड प्रवेश में प्रवेश 21 को

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड मे शुक्रवार को तृतीय चरण एवं दिव्यांग छात्रों की काउंसिलिंग शुक्रवार को हुई। प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि कटऑफ में शामिल होने वाले छात्रों का प्रवेश 21 दिसंबर को होगा।

न्यूज डायरी

वाद-विवाद में खुशबू, काव्य पाठ में देवेंद्र अव्वल

प्रयागराज। शहीद दिवस पर केपी ट्रेनिंग कॉलेज में वाद विवाद एवं काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वाद विवाद प्रतियोगिता में केपी ट्रेनिंग कॉलेज की ...

बीएड ... कटऑफ जारी

केपी ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड में काउंसिलिंग के लिए दूसरी कटऑफ जारी कर दी गई है। प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव ने बताया कि कटऑफ मे शामिल होने वाले छात्र 18 दिसंबर को कॉलेज में जरूरी दस्तावेज के साथ उपस्थित हो। वहीं, दिव्यांग कोटे के अभ्यर्थियों को बीएड में काउंसिलिंग के लिए 17 दिसंबर को बुलाया गया है।

केपी ट्रेनिंग में बीएड ...

केपी ट्रेनिंग कॉलेज की प्राचार्या डॉ. अंजना श्रीवास्तव के अनुसार बीएड की काउंसलिंग 18 नवंबर से 25 नवंबर तक होगी। 18 को कला वर्ग में 166 या इससे अधिक, सामान्य वर्ग और 19 को कला वर्ग में 160 ... ओबीसी वर्ग, 21 को विज्ञान वर्ग में 158 या इससे अधिक ... ओबीसी वर्ग, 23 को कला वर्ग में 141, 116, 160 ... वाले क्रमशः एससी, एसटी और ईडब्ल्यूएस वर्ग और 25 को ... सहित सभी अभ्यर्थियों की काउंसिलिंग होगी। ... बीएसएक्स्स से संपर्क करें।

Self Motivation and Success

Many of no have heard the phrase, "smile and things will get better." The psychological truth is that, this is right. If you wake up feeling rotten, hating the world, put a smile on your face and some bounce in your foot step and pretty soon, you will start feeling better. Most people recognise that our body language tells a lot about our mood. what most people don't know is that , because of this relationship, you can use your body language. to change your mood and how you feel about yourself. If start acting so confident (stand straight, head high, shoulders back, a smile on your face and walk crisply) even through you feel discouraged , your discouragement will begin to dissolve . You will begin to feel more confident and sure of yourself .As this begins to happen, you will become more energised and motivated , which in turn , will make you feel even better about yourself.

The key to successful self-motivation is in hiring the right type of mentor.

A mentor needs to incorporate the following qualities:

1. Define your goals , look for mentor who is interested in helping you to define your goals and not the goals of your parents , society or any other person.
2. Breakdown down your goal in to small components. First need to set a number of smaller goals until your main goal is a achieved.
3. "No passion , no self motivation": As "Elon Musk" said that "People should pursue what they're passionate about. That will make them happier than pretty much anything else." Passion is the "emotional - gas" to help you to attain all your smaller goals and eventually your main goal.
4. Hire a mentor who does not criticise your efforts , blame you for failures , or who encourages you to give up when the going gets tough. A good mentor will help you to turn failures into learning experiences. Remember that failure is a prerequisite before true success can be achieved.

Are you interested in hiring a mentor ?

The mentor to hire is YOU!

You are the best mentor you can hire because who else knows your dream and goals better than you . Fortunately , we all have a number of types of mentors within us .

At the end , I would like to conclude this by a quote of Steve Jobs , "Your time is limited , so don't waste in living someone else's life. Don't be trapped by dogma- which is living with the results of other people's thinking. Don't let the noise of other's opinions drown out your own inner voice. And most important, have the courage to follow your heart and intuition .They somehow already know what you truly want to become."

Dr. Priyanka Singh
Associate Professor
K.P. Training College
Prayagraj

Skill Development : An Indian Initiative

Skill and knowledge development are the driving force for development of any country. Skill building is a powerful tool to empower individual and improve their social acceptance. Skill development is a process of identifying individuals skill gap and ensuring to develop those skills. The skill development means to add some thing more to the abilities one has and to move it a step ahead so as to keep on developing. Globalisation knowledge and competition have intensified the need for highly skilled workforce in both the developing and developed Nations as it enables them to accelerate their goals towards higher trajectory. In India skill development is necessary from social-economic and demographic point of view. India has unique demographic importance with more than 60% of population is in youth age group. If India wants to get benefit from such a large workforce employability should be improved. But as per current information only 10% of graduates are employable and rest 90% lack special skill required to be eligible for employment in corporate sector . Though GDP is growing but job creation is not keeping pace with it. India is facing a critical situation where on one hand youth entering in job market have no jobs on the other hand industries are facing non -availability of skilled manpower, this situation occurs because of skill shortage, rigid labour laws and higher level of under employment .The present skilled workforce in India is very less than other developed countries but India has demographic importance over them.

If India is able to equip its people with required skills: job skills, life skills, entrepreneur skills, the demographic advantage can be converted into profit where citizens can contribute productively to economic growth of country. 93% of the total labour force is in unorganised sector so the major challenge before the government is to provide better skill to the vast population to enable them to get good job and decent lifestyle. In growing Economy like India there must be a proper connection between employers and training providers and larger investment in infrastructure should be maintained. Due to lack of quality Education and Training marginalized section of society are entangled in vicious circle of low skill ,low productivity and poverty . Educated labour who have not got a job matching to their qualification due to lack of knowledge of technical and soft skills, are supposed to be skilled. There is no balance between the skills acquired and skills required in the world of work. To bridge this pertinent gap Government of India has announced Skill India Campaign on 15th July 2015 with the aim to train 40 crore Indians in different skills by the year 2022. To achieve this goal government has launched a bunch of skill development programs with the aim to equip unemployed with different life skills and make India a skill capital in the world.

some of the government initiatives are :-

1. Ministry for Skill Development and Entrepreneurship formed to focus on employability through skill development.
2. National Skill Development Corporation of India was set up as public private partnership company.

3. Pradhanmantri Kaushal Vikas Yojana for providing Industry relevant skill training to unemployed youth. National Skill Development Mission has been set up to co-ordinate in different sectors and States for a skill training activities. 432 Pradhan Mantri Kaushal Vikas Kendra has been established with the target to train 1 lakh youth annually.
4. Ministry of rural development Government of India has launched Deen Dayal Upadhyay Grameen Kaushalya Yojana with a view to train poor rural youth and provide them employment.
5. The first Indian Institute of Skill is established by ministry of skill Development and Entrepreneurship in collaboration with Institute of Technical Education Singapore.
6. UDAAN special initiative for the state of Jammu and Kashmir in partnership with corporate of India and Ministry of Home Affairs implemented by National Skill Development Corporation to train 40,000 youth over 5 years of time.
7. Sector Skill Council have been set up as autonomous bodies by NSDC. They create occupational standards and qualification bodies ,develop competency framework, conduct training programs, asses and certify trainees on curriculam.

   development by them.
8. To assist ITI qualified candidates in attaining higher qualification Directorate General of Training, MSDE and National Institute of Open Schooling have join hands and launched a Space Based Distance Learning Program where these candidates can excess lectures of resource person in virtual classrooms.
9. SANKALP (Skil Acquisition and Knowledge Awareness for Livelihood Promotion) launched by MSDE.
10. School Initiative and Higher Education
11. India International Skill Centres
12. Pre-departure Orientation Training
13. Craftsman Training Scheme and Crafts Instructor Training Schemes
14. Advanced Vocational Training Schemes
15. Vocational Training program for Women

Having understood the productive value of Skill based society Govt of India has launched said schemes to train it's demographic potential.If these schemes produce positive results by achieving its aims India will certainly be able to become Skill Capital of World by encashing it's demographic dividends.

Dr Sharad Srivastava
Asstt. Professor
K.P. Training College
Prayagraj

''बालक के व्यक्तित्व विकास में वातावरण की भूमिका''

बालक के विकास में वातावरण का विशेष महत्व है। जन्म से पूर्व एवं जन्म के बाद दोनों ही प्रकार के वातावरण बच्चों के व्यक्तित्व को निर्धारित करते हैं। जन्म के बाद भी बालक का खानपान, घर का वातावरण, पास-पड़ोस एवं आस-पास का प्रकृतिक वातावरण आदि बच्चों के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं।

बच्चों के विकास में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। परिवार वातावरण का मुख्य बिन्दु है। माता-पिता का बच्चों के साथ व्यवहार, घर की आर्थिक स्थिति, खेलकूद के लिए घर में मिले अवसर, बच्चों के स्वास्थ्य रक्षा के उपाय, घर के सदस्यों का स्वाभाव अनुशासन का तरीका आदि बातें बालक के विकास को प्रभावित करती है।बालक के पालन-पोषण में जिस धैर्य, समझदारी, साहस व सूझबूझ की जरूरत होती है, उसकी कमी ही बालक के विकास को प्रभावित करती है। जीवन के प्रारम्भिक काल अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। बाल्यावस्था में जिस प्रकार की आदतों का निर्माण होता है, वे जीवन पर्यन्त चलते रहते हैं। केवल अवस्था के अनुसार उनके रूप बदलते रहते हैं। परिवार का दायित्व है कि बच्चों की प्रेरणाओं को रचनात्मक दिशा देने के लिए उनमें सुरक्षा, प्यार और विश्वास की भावना को उत्पन्न करें।

बालकों को इस बात का अनुभव कराना आवश्यक होता है कि घर व परिवार में उसका विशिष्ट स्थान है। बच्चों की जिज्ञासाओं का समाधान परिवार में ही होता है। इससे उनके ज्ञान में वृद्धि के साथ आनन्द की अनुभूति होती है और कल्पना को विस्तार मिलता है। खेल बच्चों की अभिव्यक्ति के सशक्त साधन होते हैं। बच्चों में कल्पना शक्ति के विकास के जितने अच्छे अवसर मिलते हैं। उसी के अनुसार उनकी जीवन शैली का भी निर्माण होता है। कल्पनाओं के माध्यम से बालक अपने भावी जीवन की तैयारी करते हैं। इन्हीं कल्पनाओं के जरिये उनकी रुचि की झलक मिलती है।

परिवार के बाद विद्यालय व समाज बालक के व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करते हैं और जीवन की प्रतिक्रिया शैली का निर्माण करते हैं। बालक जिन व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है, जिस प्रकार के कार्यक्रमों को देखता और सुनता है, पत्र-पत्रिकाएं व पुस्तकें पढ़ता है। उन सबका बालक के व्यक्तित्व निर्माण पर प्रभाव पढ़ता है।

बालक अपने में स्वयं अभूतपूर्व शक्ति एवं क्षमता का भण्डार है। इसलिए शिक्षा, शिक्षण, पाठ्यक्रम और शिक्षण प्रविधि आदि का निर्धारण बाल केन्द्रित होना चाहिए जो उसकी समझ व क्षमताओं के अनुकूल हो और उसे अपनी क्षमताओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति का पूरा अवसर मिल सके। बालक का वातावरण जिसमें परिवार, विद्यालय व समाज सम्मिलित है, जितना अधिक सुरक्षित और स्नेहपूर्ण होगा बालक के व्यक्तित्व का विकास उतना ही अधिक प्रभावशाली होगा।

डॉ राजेश कुमार पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर
के.पी. ट्रेनिंग कालेज
प्रयागराज

Impact Of Pandemic On Professional Development Of Learner

Pandemic is one of the biggest crisis in human race. It created a huge both positive and negative impact on every sphere of human life. On one hand there is lots of use of digital tools in teaching learning process and on the other hand students are facing great loss in practical knowledge. The education sectors are showing many fundamental changes in pandemic. Online education become a norm for the year .UGC guideline 2018 and New Education Policy 2020 helped Universities with flexible online programmes. The crisis of pandemic forced technological professionals to develop good quality virtual laboratory for practical courses, which cannot replace physical laboratory but showing its usefulness during this crisis period.

Professional course like Teacher Training programme is one, which is based on skill learning as well as school internship. Which are long been viewed as "the key component or we can say the most important component for pre- service teacher preparation" (Anderson and Stillman, 2013, p.3).Since March 2020 all private as well as government educational institutions are shut down due to spread of corona virus. As per the curriculum students have to learn practice teaching and to teach lessons in government or private schools, though schools are closed due to this crisis many pre-service teacher trainees had not yet completed their teaching requirement which often takes place in real classroom situation during normal circumstances. Till now also they are not in a position to learn skills properly and complete their internship in schools which is an essential part of their course as well as teacher recruitment in schools. Before the pandemic period schools in India was facing huge crisis and increasingly challenge of recruiting enough trained teachers in schools to meet the growing teacher demand. In this critical period Education Institutions moved towards technology based learning and encouraging teachers and students to be techno savvy. Online classes, digital examination and assessments become very common phenomenon everywhere. The practical activities are hampered to a great extent, we can sense that there was not enough space for the practical based curriculum due to delay in exams and academic sessions etc. Digital world is blocking the road of trainees how to learn skills, application of different teaching methods and use of chalk and talk in real classroom situation. Only online teaching regarding all these things are not sufficient enough for professional development of learners they need the practical implementation of skills and methods.

Learners who are related to the teacher training programme have doubts and questions when will the situation be normal? When the life be normal? Government of India is now promoting blended learning where student can learn through both online as well as offline mode but this is not the total solutions of the existing problem. Immediate measures are required to control the negative effect of lockdown, reopen of schools is very much necessary for practical and internship activities of teacher training programme, otherwise it will cause measurable decline of quality school education. Simultaneously the pandemic has paved the door for the new technology and digitalization, it need restructure of curriculum, upgradation of infrastructure facilities. Government agencies, policy makers are need to rethink about the practical aspect of the course and how to face things like this in future.

Dr. Namita Sahoo
Associate Professor
K.P. Training College
Prayagraj

Role Of Teacher's In Guiding Students To Manage Stress

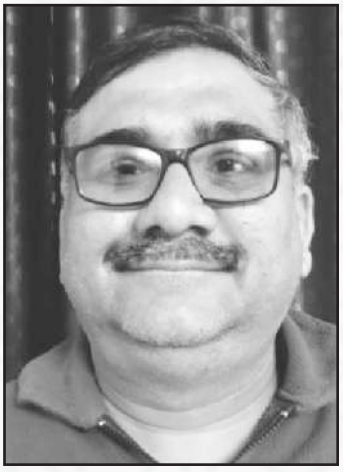

Stress is a feeling of emotional or physical tension. It can come from any event or thought that makes you feel frustrated, angry, or nervous. Stress is your body's reaction to a challenge or demand. In short bursts, stress can be positive, such as when it helps you avoid danger or meet a deadline.

A teacher is a person who helps others to acquire knowledge, competences or values.

A student is primarily a person enrolled in a school or other educational institution who attends classes in a course to attain the appropriate level of mastery of a subject under the guidance of an instructor and who devotes time outside class to do whatever activities the instructor assigns that are necessary either for class preparation or to submit evidence of progress towards that mastery. Now we know that what stress is, what a teacher is and what is a student but what is the role of teacher's in guiding students to manage stress.

Mathew Lieberman social psychologist and neuroscientist, in his book, Social: Why Our Brains are Wired to Connect, states that just like our need for food and shelter, we have the need to form relationships and to connect to other human beings. That's why we want to develop loving relationships, fit into a school, cheer on a sports team and even check our Face book pages. Developing a classroom culture of "All for one, and one for all," benefits the entire group as well as each of the individuals within that group. Teachers need to keep this in mind when developing their lesson plans. Feeling socially connected, in a safe environment, helps build relationships. "Tend-and-befriend" (Bergland, 2013) is the exact opposite of "fight-or-flight." Having good social relationships increases oxytocin and actually reduces cortisol. Face to face relationships are the best, however, "phone calls and even Facebook can reduce cortical if they foster a feeling of genuine connectivity" (Bergland, 2013). When a student experiences high levels of stress or chronic stress, regardless of her age or grade, it can interfere with her ability to learn, memorize, and earn good grades -- as well as lead to poor physical, emotional and mental health. Negative stress occurs when our ability to cope with life's demands crumbles. If we don't break down the stress chemicals (e.g. through physical activity), they stay in the blood, preventing us from relaxing. ... Some of the things students commonly cite as causes of stress include: examinations.

First of all we will understand what kind of stress a student face?

- examinations
- deadlines
- returning to study
- pressure of combining paid work and study
- difficulty in organizing work
- poor time management
- leaving assignments to the last minute

- out of control debts
- poor housing
- overcrowding
- noise
- adjusting to life in a new environment or even country
- difficulties with personal relationships (e.g. splitting up)
- balancing the demands of a family with studying
- parents or problems at home

How can a teacher help students to manage stress?

Pupils in school are very aware of the mental and physical state of their teachers. They seem to recognize the importance of well-being and stress management in learning. Taking time to manage your stress is essential in order to teach effectively and to help students with their stress around learning.

1. Improve understanding
2. Allow for individual needs
3. Keep humor and laughter in the classroom
4. Encourage mistakes. ...
5. Don't pass the pressure on. ...
6. Practice mindfulness. ...
7. Look after yourself.
8. Limit homework overload
9. Keep kids moving
10. Indulging in a hobby
11. Importance of acknowledging student's effort
12. Schedule time to organize
13. Listen music

Stress hijacks the brain when it comes to learning. Therefore, teachers need to be aware of the stress their students are experiencing in the classroom as well as in their personal lives. Although we have little control of what happens outside the classroom, we can provide the support and help they may need to handle these stressful times. By understanding how stress affects learning, teachers can help build their student's emotional resilience as well as activate their highest levels of cognition.

Atul Gurtu
Asstt. Prof.
K.P.Training College
Prayagraj

वार्षिक आख्या : 2019-2021

विगत वर्षों की भाति यह वर्ष भी महाविद्यालय के लिए प्रगति, उत्थान एवं प्रत्याशित सफलताओं से परिपूर्ण रहा। शैक्षिक उन्नयन के साथ-साथ महाविद्यालयों की भौतिक सुविधाओं में आशातीत वृद्धि हुई। महाविद्यालय के उपयोगी संसाधनों में विस्तार के साथ-साथ पठन-पाठन को भी सुविस्तार मिला। बी.एड. प्रशिक्षण के लिए निर्धारित सैद्धान्तिक तथा प्रायोगिक पाठ्यक्रम पूर्ववत सुचारू रूप से गुणात्मकता के साथ परिपूर्ण हुआ। इसी के समानान्तर उपयुक्त परिस्थितियों एवं प्रसंगानुसार अनेक गतिविधियों ने भी अपने पर फैलाए और महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों ने उन गतिविधियों के माध्यम से अपनी प्रतिभा और योग्यता को ऊँची उड़ान दी। प्रस्तुत सत्र की पाठ्य सहगामी क्रियाओं को हम निम्नलिखित पंक्तियों के अर्न्तगत देख सकते हैं।

दिनाङ्क 25-01-19 को **''राष्ट्रीय मतदाता दिवस''** का आयोजन कर **''प्रजातन्त्र में मतदान का महत्व''** विषय पर एक सार्थक चर्चा-परिचर्चा की गई जिसमें महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं प्रशिक्षणार्थियों ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए मतदान को देश की दशा एवं दिशा को प्रगतिमूलक बनाने का मूल कारण बताया। प्राचार्या डा0 अन्जना श्रीवास्तव ने मतदान के महत्व की सम्यक और सारगर्भित व्याख्या की।

''हमारे अमर शहीदों और क्रान्तिकारियों ने ब्रिटिश की गुलामी का केचुल उतारने के लिए जो उत्सर्ग किया है, उसे हमें सुरक्षित और संरक्षित रखना होगा'', इसी प्रतिज्ञा के साथ दिनाङ्क 26-01-19 को महाविद्यालय में **70वाँ गणतन्त्र दिवस** धूमधाम से मनाया गया। उक्त अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों द्वारा देशभक्ति विषयक विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

दिनाङ्क 30-01-19 को **''शहीद दिवस''** के उपलक्ष्य में महाविद्यालय में **ऐंस्थर सिंह मेमोरियल वाद-विवाद तथा देश भक्ति विषयक काव्य पाठ** का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि प्रो0 एस0 के मिश्रा, वित्त अधिकारी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज रहे जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता चौ. जीतेन्द्र नाथ सिंह, अध्यक्ष, कायस्थ पाठशाला न्यास ने की। वाद-विवाद प्रतियोगिता विषयक **''सदन की सम्मति में भारतीय परिदृश्य में समावेशी शिक्षा प्रासंगिक है''** के विपक्ष में बोलते हुए के.पी.ट्रेनिंग कालेज के विपुल प्रकाश पाण्डेय ने सर्वोत्तम वक्ता तथा विनर की शील्ड प्राप्त की। जबकि विपक्ष में बोलते हुए एस.एस.खन्ना पी.जी. कालेज की सुमैय्या अंसारी ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर रनर की चल वैजयन्ती जीती। सान्त्वना पुरस्कार के.पी. ट्रेनिंग कालेज की शिवाङ्गी सूद को मिला। देश भक्ति विषयक काव्य पाठ प्रतियोगिता में के.पी. ट्रेनिंग कालेज के बलराम ओझा ने प्रथम स्थान प्राप्त कर विनर की चल वैजयन्ती जीती। जबकि द्वितीय स्थान पर रहे के.पी. ट्रेनिंग कालेज के ही अमर नाथ को रनर की चल वैजयन्ती प्रदान की गई। काव्य पाठ में सान्त्वना पुरस्कार ई.सी.सी. की मंजरी दूबे को प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन डा0 शक्ति शर्मा तथा धन्यवाद ज्ञापन डा0 प्रियंका सिंह ने किया।

दिनाङ्क 11-02-19 को सी.एम.पी. पी.जी कालेज में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित चौधरी महादेव प्रसाद प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में महाविद्यालय के छात्राध्यापक प्रदीप कुमार (चतुर्थ सेमेस्टर) ने प्रथम स्थान प्राप्त कर 50,000/- की धनराशि प्राप्त की जो निःसन्देह महाविद्यालय परिवार के लिए अत्यन्त मान-सम्मान और गौरव का विषय है।

दिनांक 07-03-19 को महाविद्यालय में **अध्ययन मंच** के तत्वावधान में अद्यतन ज्ञान की अलख जगाने की दिशा में प्रो.एस.के. त्यागी, रानी अहिल्या बाई होल्कर विश्वविद्यालय, इन्दौर की व्याख्यान माला आयोजित की गई जिसमें आपने **''शिक्षा में सांख्यिकी''** पर अपना विशद व्याख्यान दिया। आपने चर, टी. परीक्षण तथा एनोवा का विशद विवेचन करते हुए इसके प्रयोग की विधि बताई। उक्त कार्यक्रम में प्राचार्या डा0 अंजना श्रीवास्तव ने प्रो0 त्यागी का स्वागत किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डा.नमिता साहू ने दिया।

महाविद्यालय की **63वीं वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता** दिनाङ्क 02-04-019 को मेजर रणजीत सिंह स्पोर्ट्स कॉमप्लेक्स में आयोजित की गई जिसके मुख्य अतिथि डा. बृजेश कुमार श्रीवास्तव, प्राचार्य सी.एम.पी. पी.जी. कालेज रहे। उक्त प्रतियोगिता के प्रमुख इवेन्ट्स 50 मीटर, 100 मीटर, 200 मीटर एवं 400 मीटर की दौड़, शॉटपुट, लाँग जम्प, सूई-धागा दौड़ आदि रहे। उपरोक्त इवेन्ट्स में भाग लेते हुए छात्राध्यापिका वर्ग में उर्मि कुमारी, श्वेता एवं मेरी स्टेला ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त

किया। जबकि छात्राध्यापक वर्ग में सुनील कुमार, विकास सिंह ने क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जबकि तृतीय स्थान पर अतेश कुमार और देवेन्द्र कुमार रहे। उक्त खेलकूद प्रतियोगिता में एकल चैम्पियनशिप का खिताब छात्राध्यापक वर्ग से सुनील कुमार तथा छात्राध्यापिका वर्ग से उर्मि कुमारी ने जीता। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डा. शक्ति शर्मा ने किया।

दिनांङ्क 22-04-19 को **'अस्तित्व'** के बैनर तले महाविद्यालय में **विदाई समारोह** का आयोजन किया गया जिसमें द्वितीय सेमेस्टर के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा चतुर्थ सेमेस्टर के प्रशिक्षणार्थियों को विदाई देकर उनके भावी जीवन के लिए शुभकामनाओं एवं शुभेच्छाओं की सौगात दी। प्रशिक्षणार्थियों ने इस दौरान विभिन्न मनोरंजन कार्यक्रम प्रस्तुत किये। बीती यादों, मधुर स्मृतियों तथा संस्मरणों को साझा किया। उक्त अवसर पर प्राचार्या द्वारा बी.एड. 2018 सत्र की टॉपर आरती शुक्ला, स्पोर्टस चैम्पियन 2018 के रोहित सोनकर तथा महिमा यादव एवं 2019 के सुनील कुमार और उर्मि कुमारी को स्वर्ण पदक तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। आपने समस्त प्रशिक्षणार्थियों को उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। उक्त कार्यक्रम का संचालन छात्राध्यापिका शिवाङ्गी सूद तथा प्रतिष्ठा यादव ने किया।

हिन्दुस्तान समाचार पत्र तथा भारत निर्वाचन आयोग की संयुक्त पहल से दिनाङ्क 26-04-19 को महाविद्यालय में स्वीप कार्यक्रम के तहत **मतदाता जागरूकता कार्यक्रम** का आयोजन किया गया। मतदान का लोकतांत्रिक जीवन में महत्व एवं उपयोगिता के सन्दर्भ में विभिन्न प्रशिक्षकों ने अपने-अपने विचार रखें। इस दौरान भाषण प्रतियोगिता, रंगोली, मेंहदी, नेल पेण्ट, श्लोगन, पोस्टर तथा विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। उक्त कार्यक्रम में पैनलिस्ट के रूप में डा. अन्जना श्रीवास्तव, डा. शरद श्रीवास्तव तथा डा. शक्ति शर्मा ने हिन्दुस्तान अखबार और स्वीप की मुहीम को प्रशंसनीय बताया।

दिनाङ्क 21-06-19 को महाविद्यालय ने **5वाँ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस** का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर महाविद्यालय के समस्त प्रशिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों तथा प्रशिक्षणार्थियों ने विश्व पटल पर भारत देश की अनूठी योग विद्या को पूर्णतया सफल एवं सार्थक बनाने के लिए प्रतिज्ञा ली और इसमें बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

20 मई तक महाविद्यालय में दोनों सेमेस्टर की परीक्षाओं की समाप्ति के साथ ग्रीष्मावकाश हो गया। पुनः 15 जुलाई 2019 से प्रशिक्षणार्थियों के पठन-पाठन का कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया। इसी के समानान्तर नए प्रशिक्षणार्थियों के प्रवेश की प्रक्रिया भी चलती रही और अन्ततः प्रवेश प्रक्रिया की औपचारिकताओं की पूर्णतः ले चुके प्रशिक्षणार्थियों की निश्चित कक्षाएं दिनाङ्क 01-08-19 को महाविद्यालय में हुए **ओरिएन्टेशन कार्यक्रम** के साथ प्रारम्भ हो गई।

दिनाङ्क 15-08-19 को महाविद्यालय में **73वाँ स्वाधीनता दिवस** का आयोजन किया गया। भारतीय इतिहास का यह पहला स्वाधीनता दिवस था जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सम्पूर्ण भारत ने एक साथ ध्वजारोहण किया। उक्त अवसर पर प्रशिक्षणर्थियों ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।प्राचार्या ने सभी को स्वाधीनता दिवस के महत्व को बताया को बताया तथा राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को प्रथमिकता देने की बात कही। कार्यक्रम का संचालन छात्राध्यापक सत्य प्रकाश विश्वकर्मा तथा छात्राध्यापिका आर्ची गौण ने किया।

दिनाङ्क 26-08-19 को महाविद्यालय में **उत्कर्ष** के बैनर तले तृतीय सेमेस्टर के प्रशिणार्थियों ने प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षणार्थियों के लिए स्वागत समारोह का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की प्रस्तुति के माध्यम से उनके आगमन के प्रति अपने हर्ष और उल्लास को अभिव्यक्त किया। कार्यक्रम का **संचालन** छात्राध्यापिका शिवाङ्गी सूद ने किया।

दिनाङ्क 30-08-19 को भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय की ओर से आयोजित **'जल शक्ति अभियान'** के तहत महाविद्यालय में **''वर्षा जल संचायन एवं भूजल संरक्षण''** पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें जल की बचत की दिशा में सम्यक रूप से चर्चा की गई। उक्त संगोष्ठी में प्रशिक्षकों समेत समस्त प्रशिक्षणार्थियों ने सक्रिय सहभागिता दिखाई।

महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण, प्रशिक्षण एवं सवेतन रोजगार/स्वरोजगार के सम्बन्ध में पर्याप्त मार्ग निर्देशन देने हेतु दिनाङ्क 04-09-19 को महाविद्यालय में इलाहाबाद विश्वविद्यालय सेवा योजना सूचना एवं मंत्रणा केन्द्र, प्रयागराज द्वारा **कैरियर काउन्सिलिंग कार्यक्रम** का आयोजन किया गया। डा. प्रियंका सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डा. शक्ति शर्मा ने दिया।

सर्वपल्ली डा.राधाकृष्णन की जयन्ती को महाविद्यालय में 05-09-19 को **शिक्षक दिवस** के रूप में मनाया गया जिसमें प्रशिक्षणार्थियों द्वारा विभिन्न प्रासंगिक और प्रेरक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। डा. प्रियंका सिंह ने सभी को शिक्षक दिवस की बधाई दी तथा डा.कृष्णन के व्यक्तित्व के प्रेरक-प्रसंग की चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन छात्राध्यापक सुधांशु ने किया।

आई.सी.टी. विवेल द्वारा दिनाङ्क 06-09-19 को महाविद्यालय में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें लीगली ट्रेंड वक्ता सुश्री अनमोल कोहली द्वारा ऑन लाइन क्राइम, ऑफ लाइन क्राइम तथा घरेलू हिंसा से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ दी। सुश्री कोहली का स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापन डा. प्रियंका सिंह ने दिया।

महाविद्यालय में दिनाङ्क 23-09-19 से 25-09-19 तक **स्काउटिंग गाइडिंग कार्यक्रम** का आयोजन जिला प्रशिक्षक स्काउट श्री आर.एन.शुक्ला तथा जिला प्रशिक्षक गाइड डा. नसरीन रिजवी के निर्देशन एवं संरक्षण में किया गया। उक्त कार्यक्रम के समापन समारोह के मुख्य अतिथि डा.बृजेश कुमार श्रीवास्तव, प्राचार्य, सी.एम.पी. कालेज रहे। उक्त कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों ने अनेक संदेश मूलक कार्यक्रम प्रस्तुत किए तथा निःस्वार्थ भाव से सहयोग का शपथ लिया।

दिनाङ्क 11-10-19 का दिन समर्पित था **''सहज योग मार्ग''** के लिए जिसमें कर्नल बलवंत सिंह एवं उनकी टीम के नेतृत्व में प्रशिक्षणार्थियों ने योग से सम्बन्धित सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ कुण्डलिनी जागरण के सोपान एवं जीवन में उसके लाभ के विषय में जानकारी प्राप्त किया। कार्यक्रम के उपरान्त धन्यवाद ज्ञापन डा.शक्ति शर्मा ने किया।

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला की महत्वपूर्ण कड़ी थी **''कुलभाष्कर जयन्ती समारोह''** के आयोजन की, जिसे दिनाङ्क 29-11-19 को महाविद्यालय में धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. पंकज कुमार, डीन महाविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज रहे। जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता चौ. राघवेन्द्र नाथ सिंह जी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष के.पी. ट्रस्ट ने किया। उक्त अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों ने विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में महामंत्री, कायस्थ पाठशाला न्यास, कोषाध्यक्ष के.पी. ट्रेनिंग कालेज, श्रीमती अरूणा अस्थाना, पूर्व प्राचार्या हिन्दू महिला इण्टर कालेज भी उपस्थित रहे। आप सभी को बुके देकर स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम का संचालन डा. शक्ति शर्मा ने जबकि धन्यवाद ज्ञापन डा.प्रियंका सिंह ने दिया।

महाविद्यालय परिवार के लिए यह अत्यन्त गर्व की बात है कि महाविद्यालय दिन-प्रतिदिन सफलताओं की बुलन्दियों को स्पर्श कर रहा है। महाविद्यालय की प्राचार्या डा0 अन्जना श्रीवास्तव महाविद्यालय की समस्त सुविधाओं में पूर्ण विस्तार देना अपनी प्राथमिकता मानती है जिससे इसकी शैक्षणिक उपलब्धियों को नित नूतन आयाम मिलता रहे और निःसंदेह उनकी यह भावना फलित भी हो रही है। प्रस्तुत वर्ष महाविद्यालयों के 20 बच्चों का केन्द्रीय विद्यालय में टी.जी.टी. तथा पी.जी.टी. के पदों पर, 07 डायट प्रवक्ता के पद पर तथा 16 का एल.टी.ग्रेड तथा प्रवक्ता के पदों पर चयन हुआ जिसने महाविद्यालय की यश और कीर्ति का पताका देश के विभिन्न अंचलों में फहराया। इसके अतिरिक्त इलाहाबाद जनपद के विभिन्न महाविद्यालयों में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों ने हमेशा विजय की वैज्यन्ती धारण की। हिन्दी पखवारे में जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में छात्राध्यापक अमरनाथ मिश्र ने प्रथम स्थान प्राप्त कर 12,000/- की धनराशि जीती। जबकि यहीं की शिवानी मिश्रा ने तृतीय स्थान प्राप्त कर 3,000/- की धनराशि पुरस्कार स्वरूप जीती। इसी प्रकार अन्यत्र भी प्रशिक्षणार्थियों ने महाविद्यालय के गौरव में श्री वृद्धि की।

भविष्य में भी यह महाविद्यालय प्रगति एवं विकास की वैज्यन्ती यथावत धारण किए हुए सफलता की पराकाष्ठा को स्पर्श करता रहेगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

महाविद्यालय में **71वाँ गणतन्त्र दिवस** हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्राचार्या ने झण्डारोहण के पश्चात सभी को आजादी के प्रत्येक स्वर्णिम प्रभात की हार्दिक शुभकामनाएं दी। आपने अपने उद्बोधन में देश की राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विश्लेषण कर उसे और अधिक प्रगतिशील तथा नूतन कलेवर प्रदान करने की बात कही, जिसके लिए आपने भावी शिक्षकों को क्रान्तिकारी परिवर्तन का अग्रदूत बनने का आवाहन दिया।

शहीद दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 31-01-2020 को महाविद्यालय में वाद-विवाद एवं काव्य पाठ प्रतियोगिता का

आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि प्रो. ओ.पी. श्रीवास्तव (सेवानिवृत्त) प्रचीन इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय थे। जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता मा.महामंत्री के.पी.ट्रस्ट ने की उक्त प्रतियोगिता में प्रयागराज जनपद के 07 महाविद्यालय के छात्रों ने भाग लिया। वाद-विवाद के प्रकरण **''प्रस्तावित शिक्षा नीति 2019 भारत के सामाजिक आर्थिक विकास में एक मील का पत्थर साबित होगी''** के विपक्ष में बोलते हुए के.पी.ट्रेनिंग कॉलेज की खुश्बू कुमारी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर सर्वोत्तम वक्ता और विनर की चल वैज्यन्ती जीती जबकि नेहरू ग्राम विश्वविद्यालय के तरूण कुमार ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर रनर की चल वैज्यन्ती जीती। महाविद्यालय की शिवाङ्गी सूद ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। देश भक्ति विषयक काव्य पाठ प्रतियोगिता में ई.सी.सी. की देवेन्द्र कौर ने प्रथम स्थान प्राप्त कर विनर की चल वैज्यन्ती जीती। जगपत सिंह सिंगरौर कालेज के हेमन्त यादव ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर रनर की चल वैज्यन्ती जीती। जबकि सांत्वना पुरस्कार महाविद्यालय के सत्यप्रकाश विश्वकर्मा को मिला। निर्णायक के रूप में डॉ. आभा सिंह, एसो.प्रो. सी.एम.पी. पी.जी. कालेज, डॉ. अमिता पाण्डेय, एसो.प्रो. ईश्वर शरण पी.जी. कालेज तथा डॉ.सुधा जयसवाल, एसो.प्रो.राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय रहीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शक्ति शर्मा ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ.प्रियंका सिंह ने दिया।

हमारे यहाँ एक कहावत बहु प्रचलित है कि-**''खेलकूद है स्वास्थ्य का मूल, इसमें भाग लेकर बनाओं जीवन अनुकूल''** शारीरिक और माानसिक रूप से स्वस्थ रहने का एक मात्र विकल्प ''खेलकूद'' को महाविद्यालय ने अपनी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में महत्वपूर्ण स्थान दिया है और यही कारण है कि प्रतिवर्ष महाविद्यालय में **इनडोर गेम तथा आउटडोर गेम** का आयोजन किया जाता है। इनडोर गेम की श्रृंखला में महाविद्यालय के छात्राध्यापक तथा छात्राध्यापिकाओं ने **कैरम, शतरंज, बैडमिंटन, लूडो, ब्रेनबीटा** आदि को के.पी.बी.टी.सी. महाविद्यालय के प्रवक्ता श्री मनीष जी के निर्देशन में खेला और अपनी प्रतिभा प्रदर्शन के आधार पर विभिन्न स्थान प्राप्त किए।

दिनाङ्क 06-03-20 को महाविद्यालय की **64वीं वार्षिक खूलकूद प्रतियोगिता** सम्पन्न किए जाने की पूर्ण तैयारी की जा चुकी थी परन्तु समय के गर्भ में एक घातक वायरस ''कोरोना'' का षडयंत्र पनप रहा था जिसने एक ही झटके में उन समस्त गतिविधियों पर विराम लगवा दिया जिसमें लोग एकत्रित होकर हर्ष और उल्लास के साथ आयोजन का लुफ्त उठाते थे। इतना ही नहीं इस विदेशी वायरस ने भारतीय संस्कृति पर भी प्रहार कर दिया जिसके तहत सामूहिक रूप से एकत्रित होकर आनन्दित होने की अवधारणा को दूर कर ''दूरी'' जैसे शब्द को व्यवहार में लाने को विवश कर दिया। सदियों से चले आ रहे वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा पर प्रहार कर इसने व्यक्ति को एक दूसरे से दूर रहने के लिए विवश कर दिया। यही कारण है कि कुछ समय के लिए वक्त ने अपनी रफ्तार मन्द कर दी, दिन-प्रतिदिन की गतिविधियाँ सहम गई, शिक्षण संस्थाएं तथा सभी प्रतिष्ठानों को बन्द कर दिया गया। तथा भारत सरकार ने **''जान है तो जहान है''** को दृष्टिगत रखते हुए लॉकडाउन घोषित कर दिया। परन्तु जीवन थमने का भी नाम नहीं है इसलिए भारत सरकार ने भी ''जान है और जहान है'' की अवधारणा को लागू करते हुए **''वर्क फ्राम होम''** की संस्कृति को स्थापित किया। जिसकी परिणिति **ऑनलाइन क्लासेज, नेशनल तथा इण्टरनेशनल वेबिनार, ऑनलाइन क्विज, ऑनलाइन निबन्ध तथा काव्य पाठ प्रतियोगिता** के रूप में देखने को मिली। कहने का आशय है कि बदलते परिवेश के साथ कदम से कदम मिलाते हुए एक नए कलेवर के साथ गतिविधियों को अंजाम देना शुरू कर दिया, जो अद्यतन जारी है और भविष्य में भी तब तक जारी रहेगा जब तक हमारा जन जीवन इस विदेशी और घातक वायरस से मुक्त नहीं हो जाता।

दिनाङ्क 15 अगस्त 2020 को **74वें स्वाधीनता दिवस** के उपलक्ष्य में महाविद्यालय की प्राचार्या डा. अंजना श्रीवास्तव ने राष्ट्र की अस्मिता और गौरव के प्रतीक राष्ट्रीय ध्वज का रोहण कर जहां एक ओर हमारे अमर शहीदों के उत्सर्ग को याद किया वहीं दूसरी ओर माननीय प्रधानमंत्री जी के **''आत्मनिर्भर भारत''** की अवधारणा को पूर्ण रूप से सफल करने के लिए शपथ ली गई। उक्त अवसर पर यद्यपि महाविद्यालय में छात्राध्यापकों को नहीं बुलाया गया परन्तु पूर्व सूचनानुसार समस्त छात्राध्यापकों ने ऑनलाइन अपनी उपस्थिति देकर राष्ट्र के प्रति अपने प्रेम और आस्था को प्रकट किया।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति **सर्वपल्ली डा0 राधाकृष्णन की जयन्ती** को **'शिक्षक दिवस'** के रूप में दिनांङ्क 5 सितम्बर 2020 को ऑनलाइन मोड पर धूमधाम से मनाया गया। उक्त कार्यक्रम की प्रस्तुति भौतिकता की पृष्ठभूमि पर भारतीय मूल्यों एवं संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली रही। प्राचार्या ने सभी को शिक्षक दिवस की बधाई देते हुए अपने संस्था के उन्नयन की दिशा में समर्पित

होने के संकल्प को दोहराया। कार्यक्रम का संचालन छात्रध्यापक रवि रंजन तथा छात्राध्यापिका मंतशा अली ने किया।

दिनांङ्क 26-11-2020 को महाविद्यालय में **''संविधान दिवस''** का आयोजन धूमधाम से किया गया। प्राचार्या ने सभा भवन में उपस्थित सभी प्रशिक्षकों तथा प्रशिक्षणार्थियों को इस पावन दिवस की बधाई दी और अपने उद्बोधन में कहा कि सामाजिक पुनर्निमाण, उत्थान तथा विकास के सन्दर्भ में डा0 बाबा साहब की भूमिका अविस्मरणीय है।उक्त अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

दानशीलता, समर्पण तथा त्याग की प्रतिमूर्ति प्रातः स्मरणीय **मुंशी काली प्रसाद जयन्ती समारोह** का आयोजन महाविद्यालय में दिनांङ्क 03-12-2020 को किया गया। चूंकि अभी तक परिस्थितियां कोविड-19 के प्रभाव से पूर्णतया मुक्त नहीं थी। इस लिए इस कार्यक्रम में बाहर के अतिथियों को नहीं बुलाया जा सका। शारीरिक दूरी बनाए रखते हुए यह कार्यक्रम महाविद्यालय में प्रशिक्षकों तथा प्रशिक्षणार्थियों के मध्य ही सम्पन्न किया गया। प्राचार्या ने उक्त दिवस को विशेष बताया क्योंकि इस दिन **दो महान विभूतियों की जयन्ती, मुन्शी काली प्रसाद तथा डा0 राजेन्द्र प्रसाद जी**, के आयोजन का संयोग रहा। आप दोनों महान विभूतियों के व्यक्तित्व की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए उनसे प्रेरणा लेने की बात कही।

नूतन वर्ष 2021 के आगमन के साथ-साथ महाविद्यालय में नए सत्र के प्रशिक्षणार्थियों का प्रवेश 5-01-21 को हुए ओरियन्टेशन प्रोग्राम के साथ हुआ और महाविद्यालय के इतिहास में पहली बार तीन सेमेस्टर एक साथ अध्ययन रत रहे क्योंकि कोरोना वायरस के दस्तक के साथ जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियाँ बाधित हुई थी। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं था। इस कारण सत्र थोड़ा विलम्ब से पूर्णता को प्राप्त कर सका था।

के.पी.ट्रेनिंग कालेज में दिनाङ्क 8 जनवरी 2021 को **'' एक आशा टेक्नालॉजी''** की टीम की तरफ से **''सोशल मीडिया और शिक्षक-शिक्षा में उसका उपयोग''** करने के तरीके सीखाये गए। यह कार्यशाला तृतीय सेमेस्टर के प्रशिक्षणार्थियों के लिए आयोजित की गयी। सभी ने उत्साहपूर्वक इसमें प्रतिभाग किया। टीम के सदस्यों का स्वागत डा0 प्रियंका सिंह द्वारा किया गया। कार्यशाला में सोशल मीडिया के महत्व के बारे में बताया गया, जैसे-व्याख्यानों का सीधा प्रसारण, सुविधाजनक विचारों का अदान-प्रदान, शिक्षण ब्लॉग एवं लेखन आदि। कार्यक्रम में डा0 शक्ति शर्मा, डा0 शरद श्रीवास्तव तथा डा0 नमिता साहू उपस्थिति रहीं।

दिनाङ्क 26-01-21 को महाविद्यालय में **72वाँ गणतंत्र दिवस** पूर्ण उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया गया। प्राचार्या द्वारा राष्ट्र की अस्मिता तथा गौरव पूर्ण इतिहास का स्मरण करते हुए इस अनमोल धरोहर को अक्षुण्ण रखने का सभी को संकल्प दिलाया गया। साथ ही भारतीय संविधान की मूल आत्मा, उसकी प्रस्तावना के प्रति समर्पित भाव रखने पर सभी को जागरूक किया। उक्त अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों द्वारा राष्ट्रभक्ति से लबरेज विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का संचालन छात्राध्यापक अनिल सिंह तथा छात्राध्यापिका शिवांङ्गी श्रीवास्तव ने किया। महाविद्यालय की कई गतिविधियों का संचालन किया जाना आगामी मासों में अपेक्षित था परन्तु पुनः कोरोना वायरस के दुष्प्रभाव के कारण समस्त गतिविधियों पर विराम सा लग गया और समस्त शिक्षण संस्थानों के साथ महाविद्यालय भी बन्द हो गया। परन्तु कक्षाएं अभी भी आभासी मंच (ऑनलाइन प्लेटफार्म) से निरन्तर होती रही।

दिनांङ्क 30-01-2021 को **''शहीद दिवस''** के उपलक्ष्य में महाविद्यालय में वाद-विवाद तथा काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वैसे तो यह प्रतियोगिता प्रतिवर्ष इलाहाबाद जनपद के समस्त बी.एड.कालेज के प्रशिक्षणार्थियों के मध्य सम्पन्न की जाती रही। परन्तु विगत एक वर्ष से कोरोना के दुष्प्रभाव के कारण इसका आयोजन मात्र महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों के मध्य ही किया गया। प्रस्तुत वर्ष भी यह प्रतियोगिता महाविद्यालय तक ही सीमित रही। वाद-विवाद प्रकरण सदन की सम्मति में **''वर्तमान परिदृश्य में ऑनलाइन कक्षाएं उपयोगी है''** के विपक्ष में बोलते हुए भवलोक तिवारी ने प्रथम तथा पक्ष में बोलते हुए अजय शर्मा ने द्वितीय तथा पक्ष में ही अनन्त पाण्डेय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। जबकि देश भक्ति विषयक काव्य पाठ में कृष्णा, हरिओम द्विवेदी तथा अर्पिता क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहे। उक्त कार्यक्रम का संचालन छात्राध्यापक सोनू शर्मा तथा छात्राध्यापिका रितिका मौर्या ने किया। विजयी प्रतिभागियों को प्राचार्या की तरफ से प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया गया।

दिनाङ्क 19-02-21 को महाविद्यालय में कोविड-19 के समस्त नियमों के अनुपालन में **''उत्कर्ष''** के बैनर तले महाविद्यालय

के तृतीय सेमेस्टर के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षणार्थियों का अभिनन्दन और स्वागत किया गया। सर्वप्रथम मंगलाचरण के साथ नूतन प्रवेशियों का चन्दन तिलक किया गया। उसके पश्चात विभिन्न रंगों से परिपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। साथ ही साथ विभिन्न प्रकार के गेम्स का भी आयोजन किया गया। जिसमें प्रथम सेमेस्टर के समस्त प्रशिक्षणार्थियों ने सक्रियता के साथ भाग लिया। महाविद्यालय की प्राचार्या डा0 अन्जना श्रीवास्तव ने समस्त प्रशिक्षणार्थियों को आशीर्वाद देते हुए 6 D अर्थात Dream, Discover, Deliver, Design, Discipline, Dedication को स्वयं में धारण करते हुए एक सफल शिक्षक बनने का संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन छात्राध्यापिका निशा मिश्रा तथा शिवाङ्गी श्रीवास्तव ने किया।

दिनाङ्क 01-03-21 से 03-03-21 तक महाविद्यालय में **स्काउटिंग-गाइडिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम** का आयोजन किया गया। उक्त प्रशिक्षण श्री आर.एन. शुक्ला जिला कमिश्नर स्काउट के नेतृत्व एवं निर्देशन में हुआ। निःस्वार्थ सेवाभाव, कर्तव्यनिष्ठता, समर्पण तथा सर्व जन हिताय की भावना से लबरेज इस कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों ने शिविर बनाना तथा विभिन्न प्रकार की गाँठ बनाना सीखा। साथ ही साथ कैम्प फायर कर भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्राचार्या ने अपने उद्‌बोधन में निःस्वार्थ सेवाभाव तथा परहित को महत्व देते हुए इन गुणों को सर्वोत्तम बताया।

''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निर्माण होता है'' इस कथन को दृष्टिगत रखते हुए प्रतिवर्ष 21 जून को **अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस** मनाया जाता है। महाविद्यालय ने भी इसमें अपनी सक्रिय सहभागिता प्रस्तुत की तथा कोविड के नियमों के अनुपालन में शारीरिक दूरी कायम करते हुए महाविद्यालय परिवार ने योग को अपने दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाए रखने की प्रतिज्ञा ली।

दिनाङ्क 7 तथा 8 जून को दैनिक समाचार पत्र **दैनिक समाचार** ने कोरोना महामारी के कारण पंचतत्व में विलीन आत्माओं को सादर श्रद्धांजलि स्वरूप **''सर्वधर्म समभाव''** का ऑनलाइन मोड पर आयोजन किया गया जिसमें उन्हें अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धासुमन अर्पित कर यह प्रार्थना की गई कि ईश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें। प्राचार्या ने भी महाविद्यालय परिवार के साथ **''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः''** की सुखद कामना की तथा यथा शीघ्र समाज को कोरोना मुक्त होने के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की।

परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हो, भविष्य में भी यह महाविद्यालय अपने शैक्षणिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में पूर्णतया सजग और पारदर्शी रहेगा और हम सभी की ईश्वर से यह श्रद्धावतन भाव से प्रार्थना है कि वह शीघ्र ही इस समूचे भूमण्डल से महामारी का अन्त करें, हमारी सम्पूर्ण वसुधा के जन पुनः स्वस्थ एवं निरोगी काया को प्राप्त करे तथा हम सभी की जीवन शैली पूर्ववत सहजता के साथ संचालित हो।

शुभं भवतु

डा० शक्ति शर्मा
एसोशिएट प्रोफेसर
के.पी.ट्रेनिंग कालेज, प्रयागराज

मुंशी काली प्रसाद कुलभाष्कर

मुंशी काली प्रसाद कुलभाष्कर

DEBATE COMPETITION
KPTC

KPTC

DEBATE COMPETITION

के० पी० ट्रेनिंग कालेज
इलाहाबाद

2019-11-22 15:28
U.G.C.K.P.T.C./2011-12/P/1
Om Nath Maurya
Dr. Priyanka Singh
Shakti Sharma
Ravi kumar rana
Dr. ANJANA SRIVASTAVA
sharad srivastava
AVAN SONKAR
Dr. Namita Sahoo

भव्य
भव्य
भव्य

काली प्रसाद कुलभाष्कर
जयन्ती समारोह
काली प्रसाद प्रशिक्षण महाविद्यालय